अमृतवाणी

सतगुरु रविदास महाराज जी

निशान साहिब

रविदासीया धर्म

अमृत वाणी

सतगुरु रविदास महाराज जी

निशान साहिब

रविदासीया धर्म

प्रकाशक :

श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू० पी०)

रविदासिया धर्म के नियम

(1) हमारा रहबर	: सतगुरु रविदास महाराज जी
(2) हमारा धर्म	: रविदासिया
(3) हमारी धार्मिक पुस्तक	: अमृतवाणी सतगुरु रविदास जी
(4) हमारा कौमी निशान साहिब	:
(5) हमारा नारा	: जै गुरुदेव
(6) हमारा महान् तीर्थस्थान	: श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)
(7) हमारा उद्देश्य	: सतगुरु रविदास जी की मानववादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वाल्मीकि जी, सतगुरु नामदेव जी, सतगुरु कबीर जी, सतगुरु त्रिलोचन जी, सतगुरु सैन जी तथा सतगुरु सधना जी की मानववादी विचारधारा का प्रचार करना।
	: सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना।

सतगुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य

- **प्रकाश दिवस :**
  माघ सुदी पंद्रास 1433 विक्रमी सम्वत् सन् 1377 ई० ।
- **जन्म स्थान :**
  ग्रामः सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू० पी०)
- **माता-पिता जी के नाम :**
  पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी, माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी
- **दादा-दादी जी के नाम :**
  दादा जी- पूजनीय कालू राम जी, दादी जी- पूजनीय लखपती जी।
- **सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम :**
  सुपत्नी पूजनीय श्रीमती लोना देवी जी, सपुत्र पूजनीय श्रीमान विजय दास जी।
- **ब्रह्मलीन :**
  आषाढ़ की संक्रांति 1584 विक्रमी सम्वत् (1528 ई०) बनारस में।

विषय–सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
	सिरी रागु	
1.	तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥	1
	रागु गउड़ी	
2.	मेरी संगति पोच सोच दिनु राती॥	1
3.	बेगमपुरा सहर को नाउ॥	2
4.	साधौ! का साश्त्रण सुनि कीनौ।	2
5.	तेरा जन काहे को बोलै।	3
6.	ऐसी भगति न होयि रे भाई।	4
7.	है सब आतम सुख परकास साँचो।	5
8.	कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा॥	5
9.	पहिले पहरे रैणि दे बणिजरिया	6
10.	या रामा एक तूँ दाना तेरा आदि भेख ना	7
	गउड़ी बैरागणि	
11.	घट अवघट डूगर घणा	8
12.	सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार।	9
	गउड़ी पूरबी	
13.	कूपु भरिओ जैसे दादिरा	10
	राग आसा	
14.	म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर	11
15.	संत तुझी तनु संगति प्रान	11
16.	तुम चंदन हम इरंड बापुरे	12
17.	कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु॥	12
18.	हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥	13
19.	माटी को पुतरा कैसे नचतु है॥	13
	राग गूजरी	
20.	दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥	14
	राग सोरठि	
21.	जब हम होते तब तू नाही	15

32. मेरी प्रीति गोपाल सों जन घटै हो। 22
33. त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन। 22
34. दरशन दीजै राम दरशन दीजै। 23
35. जन को तारि तारि नाथ रमईया। 23
36. जो तुम गोपालहिं नहिं गैहौ। 23
37. प्रभु जी संगति सरन तिहारी। 24
38. पांडे कैसी पूजि रची रे। 25

राग जैतसरी

39. नाथ कछूअ न जानउ॥ 25

राग सूही

40. सह की सार सुहागनि जानै॥ 26
41. जो दिन आवहि सो दिन जाही॥ 27
42. ऊचे मंदर साल रसोई॥ 27
43. दुखियारी दुखियारा जग महिं 28

राग बिलावलु

44. दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी॥ 29
45. जिह कुल साधु बैसनो होइ॥ 29
46. का तूँ सोवै जागि दिवाना। 30
47. खालिक सिकस्ता मै तेरा। 31
48. जो मोहि बेदनि कासनि आखूँ 32
49. ता थैं पतित नही कौ पावन 32
50. ऐसा ही हरि क्यूं पइवो 33
51. का गाऊं कछु गायि न होयि 34
52. अब का कहि कौन बताऊं। 34
53. खोजत किथूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार॥ 35
54. संतो कुल पखी भगति ह्वैसी कलियुग मे॥ 36

55. पांडे! हरि विच अंतर डाढा॥ 36
56. मन मेरो थिरु न रहाई.....37
57. हम घर आयहु राम भतार.....38
58. कालहु नायि ताहि पद सीसा.....38

रागु गोंड

59. मुकंद मुकंद जपहु संसार॥ 39
60. जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै॥ 40
61. आज दिवस लेऊँ बलिहारा॥ 40
62. ऐसे जानि जपो रे जीव। 41

राग रामकली

63. पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ 42
64. परचै राम रमै जो कोई। 42
65. अब मैं हारयो रे भाई। 43
66. गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ। 44
67. राम जन होऊँ न भगत कहाऊँ.....45
68. अब मेरी बूडी रे भाई तातै चडी लोक बड़ाई॥.....46
69. भाई रे! भ्रम भगति सुजानि। 47
70. ज्यो तुम कारनि केसवे अंतर लिव लागी।.....48
71. आयौं हो आयौं देव तुम सरना। 48
72. भाई रे राम कहां है मोहि बतावो॥ 49
73. ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै॥ 49
74. पंडत! अखिल खिलै नही का कहि गांऊ 50
75. नरहरि चंचल है मति मोरी.....51
76. तब राम नाम कहि गावैगा॥.....51
77. संतो अनिन भगति यह नाहीं॥ 52
78. भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई । 52
79. अब कछु मरम बिचारा हो हरि। 53
80. नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो.....54
81. ज्यो तुम कारन केसवे लालच जिव लागा 55
82. गोबिंदे भौजल बियाधि अपारा। 55
83. आगै मंदा हवै रहया परकिरति न जाई॥ 56

84. धिृग धिृग जीवणु राजे राम बिना।। 56

रागु मारु

85. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥ 57
86. सुख सागर सुरितरु चिंतामनि..... 57
87. पीआ राम रसु पीआ रे॥.....58
88. मन मोरा माया महि लपटानो।। 58
89. बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा॥ 59
90. प्रभु जी तुम औगुन बख्शणहार। 59

राग केदारा

91. खटु करम कुल संजुगतु है 60
92. रे मन राम नाम संभारि। 61
93. हो बनिजारौ राम को.....61
94. प्रीति सुधामनि आव। 62

राग भैरउ

95. बिनु देखे उपजै नही आसा॥ 63
96. ऐसा ध्यान धरौं बनवारी। 63
97. अबिगति नाथ निरंजन देवा। 64
98. भेष लियो पै भेद न जान्यो। 65
99. गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं। 65

राग बसंतु

100. तुझहि सुझंता कछू नाहि॥ 66

राग मलार

101. नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥ 67
102. हरि जपत तेऊ जना पदम कवलासपति.....67
103. मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते॥ 68

राग आसावरी

104. केसवे विकट माया तोर ताते 69
105. रामहि पूजा कहा चढ़ाऊँ॥ 69
106. बरजि हो बरजि बीठुले माया जग खाया॥ 70
107. तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु। 71
108. बंदे जानि साहिब गनी। 71
109. सु कछु बिचारियो ताथे मेरो मनु 72
110. भाई रे सहज बन्दो सोई 72
111. देहु कलाली एक पियाला। 73
112. ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं॥ 73
113. पार गया चाहै सभ कोई 74
114. सतगुर हमहु लखाई बाट। 74
115. बापुरो सत रविदास कहै रे। 75
116. ऐ अंदेस सोच यिह मेरे । 75
117. बौरी करिलै राम सनेहा। 76

सिरी रागु

शब्द - 1

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१ ॥
जउपै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१ ॥रहाउ ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२ ॥
सरीरु आराधै मोकउ बीचारु देहू ॥ रविदास समदल समझावै कोऊ ॥३ ॥

रागु गउड़ी

शब्द - 2

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती ॥१ ॥
राम गुसईया जीअ के जीवना ॥ मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१ ॥ रहाउ ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२ ॥
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥ बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 3

बेगमपुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥ नां तसवीस खिराजु न मालु खउफु न खता न तरसु जवालु॥१॥ अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥१॥ रहाउ॥ काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥ दोम न सेम एक सो आही॥ आबादानु सदा मसहूर॥ ऊहां गनी बसहि मामूर॥२॥ तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥ महरम महल न को अटकावै॥ कहि रविदास खलास चमारा॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥३॥२॥

शब्द - 4

साधौ! का साश्त्रण सुनि कीनौ। अनपावनी भगति नहीं साधी, भूखै अन्न न दीनौ।। टेक।। काम न विसरयौ डियंभ न त्यागयो, लौभ न बिसारयो देवा। पर निंदा मुख तै नहिं छाडि, निफल भयि सभु सेवा।।१।। बाट पाड़ि घर मुसि परायो, उदरि भरयो, अपराधी। होवै अपराधी केसो न सिमरियो, अहु

अविद्या साधी।।२।। हरि अरपन करि भोजन कीनो, कथा कीरत नहीं जानीं। राम भगति बिन मुक्ति न पावै, अमर जीव गराबै प्रानीं।।३।। चरन कंवल अनराग न उपज्यो, भूत दया नहीं पाली। रविदास पलु साध संगति मिलि, पूरन ब्रह्म सदा प्रतिपाली।।४।।

शब्द - 5

तेरा जन काहे को बोलै। बोलि बोलि अपनी भगति किऊ खोलै।।टेक।। बोलत बोलत बडै बियाधी बोल अबोलै जाई। बोलै बोल अबोल को पकरै बोल बोल को खाई।।१।। बोलै गियान ओर बोल धियान, बोलै बेद बड़ाई। उर में धरि धरि जब ही बोलै, तब ही मूल गंवाई।।२।। बोलि बोलि औरहि समझावै तब लगि नहीं रे भाई। बोलि बोलि समझ जब बूझी तब काल सहित सब खाई।।३।। बोलै गुरु अर बोलै चेला बोल बोल परतिति जाई। कहै रविदास थकति भयो जब ही तबहि परमनिधि पाई।।४।।

शब्द – 6

ऐसी भगति न होयि रे भाई। राम नाम बिन जो कछु करीये सो सब भरम कहायी।।टेक।। भगति न रस दान भगति न कथै गियान। भगति न बन में गुफा खुदाई।।१।। भगति न ऐसी हांसी भगति न आसा पासी। भगति न सब कुल कान गवाई।।२।। भगति न इन्द्री बांधै भगति न जोग साधै। भगति न अहार घटायी ये सब करम कहायी।।३।। भगति न निद्रा साधै भगति न बैराग बांधै। भगति न ये सब बेद बडाई।।४।। भगति न मूड मुडाये भगति न माला दिखाये। भगति न चरन धुआये ये सब गुनी जन गायी।।५।। भगति न तौलौं जानी जौं लौं आप को आप बखानी। जोई जोई करै सो सो करम बडाई।।६।। आपा गयो तब भगति पायी ऐसी है भगति भाई। राम मिलियो अपने गुन खोइयो रिधि सिधि सभै जो गंवाई।।७।। कहि रविदास छूटी सब आस तब हरि ताही के पास। आतमा थिर भयी तबही निधि पायी।।८।।

शब्द - 7

है सब आतम सुख परकास साँचो। निरंतर निराहार कलपित ऐ पाँचौ।टेक॥ आदि मधय औसान एक रस तार तूंब न तायी। थावर जंगम कीट पतंगा पूरि रहयो हरि रायी॥२॥ सर्बेस्वर सर्बङ्गी सर्ब गति करता हरता सोयी। सिव न असिव न साध अरु सेवक उनै भाव नहि होयी॥२॥ धरम अधरम मोच्छ नहिं बंधन जरा मरन भव नासा। दृसटि अदृसटि गेय अरु गियाना एक मेक रविदासा॥३॥

शब्द - 8

कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा॥ जा कै जेसी सुमिरन ता कौ तैसी सोभा।टेक॥ हमरी ही सीख सुनै सौं ही मांडे रे॥ थोरे ही इतरायी चालै पतिशाहि छाडे रे॥१॥ अतिही आतुर ह्वै कांचा ही तोले रे॥ ऊडे जल पैसे नहीं पांड राखो रे॥२॥ थोरे ही थोरे मुसीयत पराइयो धना। कहै रविदास

सुनो सन्त जना ॥३ ॥

शब्द - 9

पहिले पहरे रैणि दे बणिजरिया तैं जनम लिया संसार वे। सेवा चूको राम की बणिजारिया तेरी बालक बुद्धि गंवार वे ॥१ ॥ बालक बुद्धि गंबार न चेतियो भूला माया जाल वे। कहा होय पाछे पछिताये जल पहिले न बांधी पाल वे ॥२ ॥ बीस बरस का भया अयाना थामि न सका भाव वे। जन रविदास कहै बणिजारिया जनम लिया संसार वे ॥३ ॥ दूजे पहरै रैण दे बणिजारिया तूँ निरखत चालियो छांह वे। हरि न दमोदर ध्याइया बणिजारिया तैं लेयी न सका नांव वे ॥४ ॥ नांव न लीया औगुन कीया इस जोबन कै तान वे। अपनी परायी गिनी न कायी मंद करम कमान वे ॥५ ॥ साहिब लेखा लेसी तूँ भरि देसी भीर परै तुझ तांह वे। जन रविदास कहै बणिजारिया तूँ निरखत चाला छांह वे ॥६ ॥ तीजै पहरे रैण दे बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े प्रान वे। काया

रवानी ना करै बणिजारिया, घट भीतर बसे कुजान वे ॥७॥ एक बसै कुजान कायागढ़ भीतर पहिला जनम गंवायि वे। अब की बेर न सुकिरित कीयो बहुरि न यहि गडि पायि वे॥८॥ कंपी देह कायागढ़ छीना फिर लागा पछितान वे। जन रविदास कहै बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े परान वे॥१॥ चौथे पहरे रैन दे बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे। साहिब लेखा मांगिया बणिजारिया तू छाड़ि पुरानी थेह वे॥१०॥ छाड़ि पुरानी जिंद अयाना बालदि लदि सबेरिया वे। जम के आये बांधि चलाये बारी पूगी तेरिया वे॥११॥ पंथ चले अकेला होय दुहेला किस को देह सनेह वे। जन रविदास कहै बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे॥१२॥

शब्द - 10

या रामा एक तूँ दाना तेरा आदि भेख ना। तूँ सुलतान सुलताना बंदा सकिसता अजाना॥टेक॥ मैं बेदियानत बदनज़र दरमंद बरखुरदार। बेअदब बदबखत

बीरा बेअकल बदकार ॥१ ॥ मैं गुनहगार गुमराह गाफिल कमदिला करतार। तूँ दरकदर दरियान दिल मैं हिरसिया हुसियार ॥२ ॥ यह तन हसत खसत खराब खातिर अंदेसा बिसियार। रविदास दासहि बोलि साहिब देहु अब दीदार ॥३ ॥

गउड़ी बैरागणि

शब्द - 11

घट अवघट डूगर घणा इक निरगुणु बैलु हमार ॥ रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१ ॥ को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१ ॥ रहाउ ॥ हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥ मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२ ॥ उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥ मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३ ॥ जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु ॥ मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 12

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार। तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार॥१॥ पारु कैसे पाइबो रे॥ मो सउ कोऊ न कहै समझाइ॥ जा ते आवागवनु बिलाइ॥१॥ रहाउ॥ बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ॥ कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ॥२॥ करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान॥ संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु॥३॥ बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार। सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार॥४॥ रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार॥ पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार॥५॥ परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट। उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट॥६॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार॥ सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार॥७॥ अनिक जतन निग्रह कीए

टारी न टरै भ्रम फास॥ प्रेम भगति नही ऊपजै ताते रविदास उदास॥८ ॥१ ॥

गउड़ी पूरबी

शब्द - 13

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ॥ ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ॥१ ॥ सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी॥१ ॥ रहाउ॥ मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ॥ करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ॥२ ॥ जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार॥ प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार॥३ ॥१ ॥

राग आसा

शब्द - 14

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१ ॥ माधो अबिदिआ हित कीन ॥ बिबेक दीप मलीन ॥१ ॥ रहाउ ॥ त्रिगद जोनि अचेत संभव पुन पाप असोच ॥ मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२ ॥ जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ ॥ काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३ ॥ रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 15

संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव ॥१ ॥ संत ची संगति संत कथा रसु ॥ संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१ ॥ रहाउ ॥ संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥ २ ॥ अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ जणी लखावहु असंत पापीसणि ॥३ ॥ रविदासु भणै जो जाणै

सो जाणु ॥ संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४ ॥२ ॥

शब्द - 16

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१ ॥ माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१ ॥ रहाउ ॥ तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२ ॥ जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा ॥३ ॥

शब्द - 17

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरा जनु ॥१ ॥ तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१ ॥ रहाउ ॥ संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥ ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२ ॥

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३ ॥४ ॥

शब्द - 18

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम कबीर उजागर ॥ जनम जनम के काटे कागर ॥१ ॥ निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२ ॥ जन रविदास राम रंगि राता ॥ इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३ ॥५ ॥

शब्द - 19

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१ ॥ रहाउ ॥ जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१ ॥ मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२ ॥ कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥३ ॥६ ॥

राग गूजरी

शब्द - 20

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥ फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥१॥ माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥ अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥१॥ रहाउ॥ मैलागर बेर्हे है भुइअंगा॥ बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा॥२॥ धूप दीप नईबेदहि बासा॥ कैसे पूज करहि तेरी दासा॥३॥ तनु मनु अरपउ फूल चरावउ॥ गुर परसादि निरंजनु पावउ॥४॥ पूजा अरचा आहि न तोरी॥ कहि रविदास कवन गति मोरी॥५॥१॥

राग सोरठि

शब्द - 21

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥ अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि जल केवल जल मांही॥१॥ माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा॥ जैसा मानीए होइ न तैसा॥१॥ रहाउ॥ नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी॥ अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी॥ २॥ राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ॥ अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ॥३॥ सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुगवै सोई॥ कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई॥४॥१॥

शब्द - 22

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे॥ अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे॥१॥ माधवे जानत हहु जैसी तैसी॥ अब कहा करहुगे ऐसी॥१॥ रहाउ॥ मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहुबानी॥ खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी॥२॥ आपन

बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३ ॥ कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह कासिउ कहीऐ ॥ जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहु सहीऐ ॥४ ॥२ ॥

शब्द - 23

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥ राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१ ॥ न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥१ ॥ रहाउ ॥ जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२ ॥ कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३ ॥३ ॥

शब्द - 24

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके ॥१ ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥ बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३ ॥४ ॥

शब्द - 25

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१ ॥ माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१ ॥ रहाउ ॥ जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥२ ॥ साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३ ॥ जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४ ॥ तुमरे भजन

कटहि जम फांसा॥ भगति हेत गावै रविदासा॥५॥५॥

शब्द - 26

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा॥ हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा॥१॥ प्रानी किआ मेरा किआ तेरा॥ जैसे तरवर पंखि बसेरा॥१॥ रहाउ॥ राखहु कंध उसारहु नीवां॥ साढे तीन हाथ तेरी सीवां॥२॥ बंके बाल पाग सिर डेरी॥ इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥३॥ ऊचे मंदर सुंदर नारी॥ राम नाम बिनु बाजी हारी॥४॥ मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा॥ तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा॥५॥६॥

शब्द - 27

चमरटा गांठि न जनई॥ लोगु गठावै पनही॥१॥ रहाउ॥ आर नही जिह

तोपउ॥ नही रांबी ठाउ रोपउ॥१॥ लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा॥ हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा॥२॥ रविदास जपै राम नामा॥ मोहि जम सिउ नाही कामा॥३॥७॥

शब्द - 28

रे मन ! चेत मीचु दिन आया, तो जग जाल न भया पराया।। टेक।। कानि सुनै न नजरि दीसै, जीह थिरु न रहाई। मुण्ड रु तन थर थर कांपे, अंतहु बिरियां पहुंतौ आई।।१।। केसौ सेतह पिकु भये सभु, तन मनु बल बिलमाया। मध्यांन गयौ तुरा चलि आई, अजहुं जग रह्यौ भरमाया।।२।। पानी गयो पलु छीजै काया, यहि तन जरा जराना। पांचौ थाके जरा जरु सानै, तौ रामहि मरमु न जाना।।३।। हंस पंखेरू चंचलु भाई, समुझि पेखि मन मांहि। प्रति पलु मीचु गरासै देही, फुनि रविदास चेतहु नांहि।।४।।

राग धनासरी

शब्द - 29

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१ ॥ हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे ॥ कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥२ ॥१ ॥

शब्द - 30

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अंम्रित राम नाम भाखउ ॥१ ॥ मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥२ ॥ रहाउ ॥ साध संगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२ ॥२ ॥

शब्द - 31

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥ हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे॥१॥ रहाउ॥ नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे॥ नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे॥१॥ नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती॥ नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥ नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥२॥ नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे॥ तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे॥३॥ दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे॥ कहै रविदास नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे॥४॥३॥

शब्द - 32

मेरी प्रीति गोपाल सों जन घटै हो। मै मोल महिंगै लई तन सटै हो।टेक॥ रिदै सुमिरन करूँ नैन अवलोकनो स्रवना हरि कथा पूरि राखूँ। मन मधुकर करौं चरना चित्त धरौं राम रसायन रसन चाखूँ॥१॥ साधु संगति बिना भाव नहिं

ऊपजै भाव बिन भगति क्यों होइ तेरी। बंदत रविदास राज राम सुनु बीनती

शब्द - 33

त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन। अतिशय सूल सकल बलि जावन॥ टेक॥ काम क्रोध लंपट मन मोरा। कैसे भजन करुं मैं तोरा॥१॥ बिषम बिषाद बहंडनकारी। असरन सरन सरनि भौहारी॥२॥ देव देव दरबार दुआरै। राम राम रविदास पुकारै॥३॥गुर प्रसाद कृपा करो न देरी॥२॥

शब्द - 34

दरशन दीजै राम दरशन दीजै। दरशन दीजै बिलंब न कीजै॥टेक॥ दरशन तोरा जीवन मोरा। बिन दरशन क्यों जिवै चकोरा॥१॥ माधो सतिगुर सब जग चेला। अब के बिछुरे मिलन दुहेला॥२॥ धन जोबन की झूठी आसा। सत सत भाखै जन रविदासा॥३॥

शब्द – 35

जन को तारि तारि नाथ रमईया। कठिन फँद परियो पंच जमईया।।टेक।। तुम बिन सकल देव मुनि ढूँढू। कहूँ न पाऊँ जम पास छुड़ईया।।१।। हम से दीन दयाल न तुमसर। चरन सरन रविदास चमईया।।२।।

शब्द – 36

जो तुम गोपालहिं नहिं गैहौ। तो तुम को सुख में दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ।।टेक।। माला नाम सभै जग डहको झूठौ भेख बनैहौ। झूठे ते साँचि तब होइहौ हरि की सरन जब ऐहौ।।१।। कन रस बत रस और सबै रस झूठहि मूड़ मंढैहौ। जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझि जैहौ।।२।। जौ जन राम नाम रँग राते और रँग न सुहैहौ। कहै रविदास भजो रे कृपा निधि प्रान गये पछितैहौ।।३।।

शब्द – 37

प्रभु जी संगति सरन तिहारी। जग जीवन राम मुरारी।।टेक।। गली गली को जल बहि आयो, सुरसरि जायि समायो। संगत कै परताप महातम, नाम गंगोदक पायो।।१।। स्वाँति बूंद बरसैं फनि ऊपर, सीस बिषै बिष होय। बाही बूँद कै मोती निपजै संगति की अधकाई।।२।। तुम चंदन हम इरंड बापुरे, निकट तुम्हारे बासा। नीच बृिख तै ऊंच भये है, तुम्हारी बास शुबासा।।३।। जाति भी ओछी पात भी ओछा, उच्छा कसब हमारा। तुम्हारी कृपा ते ऊंच भये है, कहै रविदास चमारा।।४।।

शब्द - 38

पांडे कैसी पूजि रची रे। सति बोलै सोय सतिवादी, झूठी बात बदी रे।।टेक।। जो अबिनासी सबका करता, व्यापि रहिउ सब ठोर रे। पँच तत्त जिनि कीया पसारा, सो यों ही किछु और रे।।१।। तूँ जो कहैत हौ यौ ही करता, याकूँ मानिख करै रे।। तारणि सकति सही जे या मैं, तौ आपण क्यों न तिरै रे।।२।।

अंही भरोसे सब जग बूडा, सुण पंडित की बात रे। या कै दरसि कूण गुणा छूटा, सब जग आया जात रे॥३॥ या की सेव सूल नहिं भाजै, कटै न संसे पांस रे। सोचि विचारि देख या मूर्ति, यूं छांडी रविदास रे॥४॥

राग जैतसरी

शब्द - 39

नाथ कछूअ न जानउ॥ मनु माइआ कै हाथि बिकानउ॥१॥ रहाउ॥ तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी॥ हम कहीअत कलिजुग के कामी॥१॥ इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ॥ पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ॥२॥ जत देखउ तत दुख की रासी॥ अजौं न पत्याइ निगम भए साखी॥३॥ गोतम नारि उमापति स्वामी॥ सीसु धरनि सहस भग गांमी॥४॥ इन दूतन खलु बधु करि मारिओ॥ बडो निलाजु अजहू नही हारिओ॥५॥ कहि रविदास कहा कैसे कीजै॥ बिन रघुनाथ सरनि का की लीजै॥६॥ १॥

राग सूही

शब्द - 40

सह की सार सुहागनि जानै ॥ तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१ ॥ सो कत जानै पीर पराई ॥ जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१ ॥ रहाउ ॥ दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ पुर सलात का पंथु दुहेला ॥ संगि न साथी गवनु इकेला ॥२ ॥ दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥ बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 41

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ संगु चलत है हम भी चलना ॥ दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥१ ॥ किआ तू सोइआ जागु

इआना ॥ तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१ ॥ रहाउ ॥ जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥ सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥ हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२ ॥ जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ चेतसि नाही दुनीआ फनखाने ॥३ ॥२ ॥

शब्द - 42

ऊचे मंदर साल रसोई ॥ एक घरी फुनि रहनु न होई ॥१ ॥ इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥१ ॥ रहाउ ॥ भाई बंध कुटंब सहेरा ॥ ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥२ ॥ घर की नारि उरहि तन लागी ॥ उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥३ ॥ कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ हम तउ एक राम कहि छूटिआ ॥४ ॥३ ॥

राग सूही चौपदा

शब्द - 43

दुखियारी दुखियारा जग महिं , मन जप लै राम पियारा रे।। टेक।। गढ़ कांचा तस्कर तिह लागा, तूँ काहे न जाग अभागा रे।। नैन उघारि न पेखियो तूने, मानुष जनम किह लेखा रे।। पाऊं पसार किमि सोय परयो, तैं जनम अकारथ खोया रे। जन रविदास राम नित भेंटहि, रहि संजम जागित पहरा रे।।१ ।।

राग बिलावलु

शब्द - 44

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥१ ॥ तू जानत मै किछु नही भवखंडन राम ॥ सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२ ॥ कहि रविदास अकथ कथा बहु

काइ करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 45

जिह कुल साधु बैसनो होइ ॥ बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१ ॥ धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥ जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२ ॥ पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबर अउरु न कोइ ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३ ॥२ ॥

शब्द - 46

का तूँ सोवै जागि दिवाना। झूठा जीवन सांचि करि जाना ॥टेक ॥ जो दिन आवै सो दुख मे जाही। कीजै कूच रहियो सच नाही ॥ संगि चलियो है हम

भी चलना। दूर गवन सिर ऊपर मरना ॥१ ॥ जो कछु बोया लुनिये सोई। ता में फेर फार नहीं होई ॥ छाड़िय कूर भजो हरि चरना। ता को मिटै जनम अरु मरना ॥२ ॥ जिनि जीऊ दिया सो रिजक अमड़ावै। घट-घट भीतर रहट चलावै ॥ करि बंदगी छाड़ि मैं मेरा। हिरदै करीम संभरि सबेरा ॥३ ॥ आगे पंथ खरा है झीना। खाँडै धार जैसा है पैना ॥ जिस ऊपर मारग है तेरा। पंथी पंथ संवार सवेरा ॥४ ॥ क्या तैं खरचा क्या तैं खाया। चल दरहाल दिवान बुलाया ॥ साहिब तो पै लेखा लेसी। भीरि परिया तूँ भरि भरि देसी ॥५ ॥ जनम सिराना किया पसारा संवारा। सांझ परी चहुँ दिसि अंधियारा ॥ कहि रविदास निदानि दिवाना। अजहुँ न चेतै दुनी फंदखाना ॥६ ॥

शब्द - 47

खालिक सिकस्ता मै तेरा। दे दीदार उमेदगार बेकरार जीऊ मेरा ॥टेक ॥ अवलि आखिर इलह आदिम मौज फरिस्ता बन्दा। जिस की पनह पीर

पैगम्बर मैं गरीब क्या गंदा ॥१ ॥ तूं हाजरा हजूर जोग इक अवर नहीं दूजा। जिसके इसक आसरा नाहीं क्या निवाज क्या पूजा ॥२ ॥ नालीदोज़ हनोज बेबखत कमि खिजमतिगार तुम्हारा। दरमाँदा दर ज्वाब न पावै कहि रविदास बिचारा ॥३ ॥

शब्द - 48

जो मोहि बेदनि कासनि आखूँ हरि बिन जीवन कैसे करि राखो ॥टेक ॥ जिव तरसै इक दंग बसेरा करहु, सँभाल तुम सिरजन मेरा ॥ बिरह तपै तन अधिक जरावै, नींद न आवै भोजन न भावै ॥१ ॥ सखी सहेली गरब गहेली पिउ की बात न सुनहु सहेली ॥ मैं रे दुहागनि अधिकरि जानी, गयो सो जोबन साध न मानी ॥२ ॥ तूं दाना सांईं साहिब मेरा, खिदमतगार बंदा मैं तेरा ॥ कहै रविदास

अंदेसा येही, बिन दरसन क्यों जीवहि सनेही ॥३ ॥

शब्द - 49

ता थैं पतित नही कौ पावन, हरि तज आन न ध्याया रे।। हम अपूजि पूजि भये हरि थै, नाम अनूपम गाया रे।। टेक।। अस्टादस बुयाकरन बखानै रे, तीन काल खट जीता रे।। प्रेम भगति अंतर गति नाहीं, ता ते धानुक नीका रे।।१ ।। ता थै भलो स्वान को सत्रु, हरि चरन न चित लाया रे।। मूआं मुकति बैकुंठ बासा, जीवत इहां जस पाया रे।।२ ।। हम अपराधी नीच घर जनमे, कुटम्ब लोक करै हाँसी रे।। कहै रविदास राम जपु रसना, काटै जनम की पासी रे।।३ ।।

शब्द - 50

ऐसा ही हरि क्यूं पइवो, मन चंचलु रे भाई। चपल भयो चहुंदिस धावइ, राख्यो रहाई।। टेक।। मैं मेरी छूटइ नहिं कबहूं, मैं मंमता मदु बीध्यो। लोभ

मोह महि रहयो रूझानौ, नित विषया रस रीझयो।।१।। डंम कोह मोह माया बसु, कपट कूड़ हूं बंधायौ।। काम लुबधु को बसि परयौ, कुलकांनि छांड़ि बिकायो।।२।। छापा तिलक छपौ नहीं सोभइ, जौ लौं केसौ नहिं गायो।। संजमि रह्यो न हरि हूँ सिमरियो, बिरथा भरमयो रू भरमायो।।३।। अनिक कौतक कला काछै कछे, बहुरि सांग दिखावौ।। मूरिख आपन आपु समुझि नहिं, औरनि का समुझावौ।।४।। आस करै वैकुण्ठ गवन कउ, चल मन कभउ न थिरायौ।। जौ लौं मन वसि नहिं हूंतौ, तौं लगि सभु जूठारियो।।५।। कपट कीया रीझय नहिं कैसौ, जगु करता नहिं कांचा।। कहि रविदास भजौ हरि माधौ, सेवग होवै मन सांचा।।६।।

शब्द - 51

का गाऊं कछु गायि न होयि, गाऊं रूप सहजै सोयि।। टेक।। नहिं अकास नहिं धर धरणी, पवन पुर घट चंदा। नहिं अब राम कृस्न गुण भाई, बोलत

है सुछ छंदा।।१।। नहिं अब बेद कतेब पुराननि, सुनि सहिज रे भाई।। नहिं अब मैं तैं, तैं मैं नांही, का सिउं कहो बताई।।२।। भणै रविदास का कहि गाऊं, गायिन गायि हराणा।। समुझि बिचारि बोलि कहां घौं, आपहि आप समाणा।।३।।

शब्द - 52

अब का कहि कौन बताऊं। अब का कहि देबलि देव समाऊं।। टेक।। का सिऊं राम कहौं सुनि भाई, का सिऊं कृस्न करीमां। का सिऊं बेद कतेब कहूँ अब, का सिऊं कहूँ लयो लीना। का सिऊं तप तीरथ बरत पूजा, का सिऊं नाउं कहाऊं।।१।। का सिऊं भिस्ति दोजिगु ना सति करि, का सिऊं कहूं कहाई।।२।। का सिऊं जीव सीव कहौं साधौ, सुंनि सहजि घरि भाई। का सिऊं गुणी न गुण कहूँ माधौ, का सिऊं कहूँ बताई।।३।। जल के तरंग जल मांहि समाई, कहि का कौ नांव धरयीये। ऐसे एक रूप मैं माधो, आपण ही

निरवरिये ।४ ।। भणै रविदास अब का कहि गाऊं, जउ कोई औरहि होई। जा सिऊं गायिये गायि कहत हैं, परम रूप हम सोई।।५ ।।

शब्द - 53

खोजत किथूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार।टेक ॥ कस्तूरी मृग पास है रे, ढूंढ़त घास फिरै। पाछै लागो काल पारधी छिन महिं प्रान हरै॥१ ॥ इड़ा पिंगला सुखमना नाड़ी, जा मैं चित न धरै। सहसतार महिं भंवर गुफा है, भंवरा गूंज करै॥२ ॥ दिल दरियाव हीरा लाल है गुरमुख समझ परै। मरजी वा की सैन विचारै तउ हीरा हाथ परै॥३ ॥ कहि रविदास समुझि रे सन्तो, एहु पद है निरवान। एहु रहसि कोउ खोजै बूझे, सोउ है सन्त सुजान॥४ ॥

शब्द - 54

संतो कुल पखी भगति ह्वैसी कलियुग मे ॥ निपख बिरला निवहैसी ॥ जाणि पिछाणि हरिष मन हुलसे ॥ बिन पिछाणि मिलत मुरझासी ।टेक ॥ अपसवारथ

परमाधि दधयादे ॥ परमारथ न दिड़ासी ॥ बिन बिसवास बांझ सुति जइसै ॥ हरि कारनि क्यों रासी ॥१ ॥ भाव भगति हिरदै नहिं आसी ॥ विषै लागी सुख पासी ॥ कहि रविदास पूरा गुर पावै ॥ सवांग की सवांग दुखासी ॥२ ॥

शब्द - 55

पांडे! हरि विच अंतर डाढा ॥ मुंड मुंडावै सेवा पूजा भ्रम का बंधन गाढ़ा ।टेक ॥ माला तिलक मनोहर बानों लागो जम की पासी ॥ जो हरि सेती जोड़यो चाहो तो जग सो रहो उदासी ॥१ ॥ भुख न भाजै तृस्ना न जाई कहो कौण कवन गुण होई ॥ जो दधि में कांजी को जावण तो घृत न काडै कोई ॥२ ॥ करनी कथनी ज्ञान अचारा भगति इन्हुँ सो नयारी ॥ दोय घोड़ा चढ़ि कोऊ न पहुँचौ सतिगुरु कहै पुकारी ॥३ ॥ जो दासा तण कीयो चाहो आस भगति की होई ॥ तो निरमल सांग मगन हवै नाचो लाज सरम सब खोई ॥४ ॥ कोई दाधौ कई सीधो साचौ कूड़ निति मारया ॥ कहै रविदास हौ न कहत हौ योकादसत

पुकारिया ॥५ ॥

शब्द - 56

मन मेरो थिरु न रहाई, कोटि कौतिक करि दिखरावै, इत उत जग महिं धाई।। टेक।। माया ममता मोह लपटानो, दिन दिन उरझत जाई। सुआन पुछ कभु होय न सूधो, कीजहु लाख उपाई।। गुरु कौ गियान प्रेम की सांटी, कुबुध कुकरम छुड़ाई। कहि रविदास मन थिरु ह्वैसी, चलि सब छाडि गुरसरणाई।।१ ।।

शब्द - 57

हम घर आयहु राम भतार, गावहु सखि मिल मंगलाचार। तन मन रत करहिं आपुनो, तौ कहुं पाइहिं पिव पिआर॥१ ॥ प्रीतम को जो दरसन पायि, मन मन्दिर महिं भयो उजियार। हौं मड़यि तै नौ निधि पाई, कृपा कीन्ही राम करतार॥२ ॥ बहुत जनम बिछुरे पिव पायो, जनम जनम तैं बिलयि रार।

कहि रविदास हौं कछु नहिं जानौं, चरण कंवल महिं तुव मुरार॥३॥

शब्द - 58

कालहु नायि ताहि पद सीसा, नहिं बिसराऊं खिन एकहु ईश्वर।। टेक।। जनम मरुन अरु जग जाला, नाम परताप न बिआपहिं ब्याला। अगत विगत अनादि अनूपा, विसव वियापक ब्रह्म अरूपा।। घट घट तिह पेखीयत अयिसे, जल महिं लहिर, लहिर जल जयिसे। कहि रविदास हरि सरब वियापक, सरब चिंतामणि सरब प्रतिपालक।।१।।

रागु गोंड

शब्द - 59

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥ बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥ सोई मुकंद मुकति का दाता॥ सोई मुकंद हमारा पित माता॥१॥ जीवत मुकंदे मरत मुकंदे॥ ता के सेवक कउ सदा अनंदे॥१॥ रहाउ॥ मुकंद मुकंद हमारे प्रानं॥ जपि

मुकंद मसतकि नीसानं॥ सेव मुकंद करै बैरागी॥ सोई मुकंदु दुरबल धन लाधी॥२॥ एक मुकंदु करै उपकारु॥ हमरा कहा करै संसारु॥ मेटी जाति हुए दरबारि॥ तुही मुकंद जोग जुग तारि॥३॥ उपजिओ गिआन हुआ परगास॥ करि किरपा लीने कीट दास॥ कहु रविदास अब त्रिसना चूकी॥ जपि मुकंद सेवा ताहू की॥४॥१॥

शब्द - 60

जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै॥ जे ओहु दुआदस सिला पूजावै॥ जे ओहु कूप तटा देवावै॥ करै निंद सभ बिरथा जावै॥१॥ साध का निंदकु कैसे तरै॥ सरपर जानहु नरक ही परै॥१॥ रहाउ॥ जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति॥ अरपै नारि सीगार समेति॥ सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै॥ करै निंद कवनै नही गुनै॥२॥ जे ओहु अनिक प्रसाद करावै॥ भूमि दान सोभा मंडपि पावै॥

अपना बिगारि बिरांना सांढै ॥ करै निंद बहु जोनी हांढै ॥३ ॥ निंदा कहा करहु संसारा ॥ निंदक का परगटि पाहारा ॥ निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४ ॥२ ॥

शब्द - 61

आज दिवस लेऊँ बलिहारा ॥ मेरे गृह आया राजा राम का प्यारा ॥ टेक ॥ आँगन बगड़ भवन भयो पावन ॥ हरिजन बैठे हरिजस गावन ॥२ ॥ करुँ डंडोत चरन पखारूं ॥ तन मन धन संतन पर वारुँ ॥३ ॥ कथा कहैं अरु अर्थ बिचारैं ॥ आप तरैं औरन को तारैं ॥४ ॥ कह रदिदास मिलै निज दास ॥ जनम जनम कै काटै पास ॥५ ॥

शब्द - 62

ऐसे जानि जपो रे जीव। जपि लियो राम न भरमो जीव ॥टेक ॥ गनिका थी किस करमा जोग। पर पुरसन सो रमती भोग ॥१ ॥ निसि बासर दुस्करम

कमाई। राम कहत बैकुंठे जाई ॥२ ॥ नामदेव कहिये जाति कै ओछ। जा को जस गाइये त्रिलोक ॥३ ॥ भगति हेत भगता के चले। अंकमाल ले बीठल मिले ॥४ ॥ कोटि यग जो कोउ करै। राम नाम सम तऊ न निस्तरै ॥५ ॥ निरगुन का गुन देखो आई। देही सहित कबीर सिधाई ॥६ ॥ मोरी कुचिल जात कुचिल में बास। भगत चरन हरिचरन निवास ॥७ ॥ चारिउ बेद किया खंडौति। जन रविदास करै डंडौति ॥८ ॥

राग रामकली

शब्द - 63

पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥१ ॥ देव संसै गांठि न छूटै ॥ काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटै ॥१ ॥ रहाउ ॥ हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न

नासी ॥२ ॥ कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे ॥ मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 64

परचै राम रमै जो कोई। पारस परसे दुबिधा न होई ॥ टेक ॥ जो दीसे सो सकल बिनास। अनडीठे नाहीं विसवास ॥१ ॥ बरन सहित कहै जो राम। सो भगता केवल निहकाम ॥२ ॥ फल कारन फूलै बनराई। उपजै फल तब पुहुप बिलाई ॥३ ॥ ज्ञानहि कारन करम कराई। उपजै ज्ञान तब करम नसाई ॥४ ॥ बटिक बीज जैसा आकार। पसरियौ तीनि लोक पासार ॥५ ॥ जहाँ का उपजा तहां समाई। सहज शूनय मे रह्यो लुकाई ॥६ ॥ जो मन बिंदै सोई बिंद। अमावस मैं जैसे दीसै चंद ॥७ ॥ जल में जैसे तूंबा तिरै। परचै पिंड जीवै नाहिं मरै ॥८ ॥ सो मुनि कौण जु मन को खायि। बिन दुआरे तिरलोक समाइ ॥९ ॥ मन की महिमा सब कोय कहै। करता सो जो अनभै रहै ॥१० ॥ कहै रविदास

यहु परम बैराग। राम नाम कीन जपहु सुभाग॥११॥ घृत कारनि दधि मथै सयान। जीवन मुक्ति सदा निरबाण॥१२॥

शब्द - 65

अब मैं हारयो रे भाई। थकित भयों सभ हाल चाल ते, लोकन बेद बड़ाई॥ टेक॥ थकित भयो गायन अरु नाचन, थाकी सेवा पूजा॥ काम क्रोध ते देह थकित भई, कहूँ कहाँ लौं दूजा॥१॥ राम जनु होऊँ न भगत कहाऊँ, चरन पखारु न देवा॥ जोई जोई करूँ उलटि मोहिं बांधे, ता ते निकटि न भेवा॥२॥ पहले ज्ञान का किया चाँदना, पीछे दीया बुझाई॥ शुन्य सहज मैं दोऊ त्यागे राम कहूँ न खुदाई॥३॥ दूर बसै खट कर्म सकल अरु, दूरऊ कीन्हे सेऊ॥ ज्ञान ध्यान दोऊ दूर कीन्हे, दूरिउ छाड़ै तेऊ॥४॥ पंचो थकित भयो हैं जहाँ तहाँ, जहाँ तहाँ थिति पाई॥ जा कारन मैं दौरयो फिरतो, सो अब घट में पाई॥५॥ पंचो मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई दिखाई॥ अब मन फूलि

भयो जग महिया, उलटि आप में समाई ॥६ ॥ चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो, अब मोसे चलयो न जाई ॥ साई सहज मिलयो सोई सनमुख, कहै 'रविदास' बड़ाई ॥७ ॥

शब्द - 66

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ। गावणहार कूँ निकट बताऊँ ॥ टेक ॥ जब लगि है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा। जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावणहारा ॥१ ॥ जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बडै हंकारा। जब मन मिल्यौ राम सागर सो, तब यह मिटी पुकारा ॥२ ॥ जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त सुणि गावै। जहाँ जहाँ आस धरत है यह मन, तहाँ तहाँ कछु न पावै ॥३ ॥ छाड़ै आस निरास परम पदु, तब सुख सति कर होई। कहै 'रविदास' जासूँ और कहत है, परम तत्त अब सोई ॥४ ॥

शब्द - 67

राम जन होऊँ न भगत कहाऊँ, सेवा करुँ न दासा। गुनीं जोग जगय कछू न जानूं, तां थै रहूँ उदासा।टेक॥ भगत हूआ तो चड़ै बड़ाई, जोग करूँ जग मानै॥ गुन हुआ तो गुणी जन कहै, गुनी आप को तानै॥१॥ ना मैं ममता मोह न मोहिया, ये सब जाहि बिलाई॥ दोजख भिस्त दोऊ सम कर जानै-दुहुँ तरक है भाई॥२॥ मैं तैं तैं मैं देखि सकल जग, मैं तैं मूल गंवाई। जब मन समता एक एक मन, तबहिं एक है भाई॥३॥ किसन करीम राम हरि राघव, जब लग एक न पेखा। बेद कतेब कुरान पुराननि, सहज एक नहिं देखा॥४॥ जोय जोय कर पूजिए सोय सोय कांची, सहज भाव सति होई। कहि 'रविदास' मैं ताहि को पूजूँ, जाके गांव ठांव नहिं कोई॥५॥

शब्द - 68

अब मेरी बूडी रे भाई तातै चडी लोक बड़ाई।टेक॥ अति अहंकार उर में सत-रज-तम ता मैं रह्यो उरझाई॥ क्रम बसि परयौ कछू न सूझै, स्वामी नाम

भुलाई ॥१ ॥ हम मानौ गुनी जोग सुनि जुगता हम महा पुरुख रे भाई ॥ हम मानौ सूर सकल बिधि तियागी ममता नहीं मिटाई ॥२ ॥ हम मानै अखिल शुन्नि मन सोध्यो सब चेतनि सुधि पाई। ज्ञान ध्यान सबही हम जान्यो बूझै काऊन सों जाई ॥३ ॥ हम मानै परम प्रेम रस जान्यो, नौ बिधि भगति कराई ॥ स्वांग देखि सबही जग डहक्यो फिर आपन पोर बँधाई ॥४ ॥ सांग धे सांच न जान्यो लोगनि यहि भरमाई ॥ सयंग रुप मेशी जब पहेरी बोली तब सुधि पाई ॥५ ॥ ऐसी भगति हमारी सन्तो प्रभुता एह बड़ाई ॥ आपन अन्नन और नहिं मानत तातै मूल गंवाई ॥६ ॥ भणै रविदास उदास ताही तैं अब कछु करयो न जाई ॥ आपो खोइया भगति होत है तब रहै अन्तर उरझाई ॥७ ॥

शब्द - 69

भाई रे! भ्रम भगति सुजानि। जो लों साँच नहीं पहिचान ॥टेक ॥ भ्रम नाचन भ्रम गायण भ्रम जप तप दान। भ्रम सेवा भ्रम पूजा भ्रम सों पहिचान ॥१ ॥

भ्रम खट कर्म सकल संहिता भ्रम गृहि बन जानि ॥ भ्रम करि करि करम कीउ भ्रम की यह बानि ॥२ ॥ भ्रम इंद्री निग्रह कीया भ्रम गुफा में बास ॥ भ्रम तौ लौ जानिये करै सुन्न की आस ॥३ ॥ भ्रम शुद्ध सरीर जो लौ भ्रम नांव बिनांव ॥ भ्रम भनि रविदास तौ लौ जौ लौ चाहै ठांव ॥४ ॥

शब्द - 70

ज्यो तुम कारनि केसवे अंतर लिव लागी। एक अनुपम अनुभवी किमि होइ बिभागी ॥टेक ॥ एक अभिमानी चातृगा बिचरत जग माहीं। जदपि जल पूरन मही कहूँ वा रुचि नाहीं ॥१ ॥ जैसे कामी देखि कामिनी हिरदै सूल उपजाई ॥ कोटि वेद बिधि उचरै बाकी बिथा न जाई ॥२ ॥ जो जेहि चाहै सो मिलै आरति गति होई। कहै रविदास यह गोप नाही जानै सब कोई ॥३ ॥

शब्द - 71

आयौं हो आयौं देव तुम सरना। जानि कृपा कीजै आपनौ जना ॥ टेक ॥

त्रिबिधि जोनि बास जम की अगम त्रास तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरयौ॥ ममिता अंह विखै मदि मातौं ऐह सुख कबहुं न दूतुर तिरौं॥१॥ तुम्हरे नांव बिसास छाड़ी है आन की आस संसार धरम मेरे मन न धीजै॥ रविदास दास की सेवा मानि हो देवाधिदेव पतित पावन नाम प्रगट कीजै॥२॥

शब्द - 72

भाई रे राम कहां है मोहि बतावो॥ सत राम ता के निकट न आवो॥ टेक॥ राम कहत सब जगत भुलाना॥ सो यहु राम न होई॥ करम अकरम करुनामय केसो॥ करता नाव सु कोई॥१॥ जा रामहि सबै जग जानै॥ भ्रमि भूलो रे भाई॥ आप आप थै कोई न जाणै॥ कहै कौन सो जाई॥२॥ सत तन लोभ परस जीय तन मन॥ गुन परसत नहीं जाई॥ अलिख नाम जा कौ ठौर न कतहूँ॥ क्यूं न कहौ समुझाई॥३॥ भणै रविदास उदास ताही तै॥ करता कौ हैं भाई॥ केवल करता एक सही करि॥ सति राम तिहि ठाईं॥४॥

शब्द - 73

ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै ॥ साहिब मिलै तो को बिगरावै ॥ टेक ॥ सब में हरि है हरि में सब है हरि अपनो जिन जाना ॥ साखी नहीं और कोई दूसर जाननहार सयाना ॥१ ॥ बाजीगर सों रचि रहीये बाजी का मरम न जाना ॥ बाजी झूठ साँच बाजीगर जाना मन पतियाना ॥२ ॥ मन थिर होइ तो कोई न सूझै, जानै जाननहारा ॥ कहै रविदास बिमल विवेक सुख सहिज सरूप संभारा ॥३ ॥

शब्द - 74

पंडत! अखिल खिलै नही का कहि गांऊ कोई न कहै समुझाई ॥ अबरन बरन रूप नहीं जा के सो कहाँ लयो लायि समाई ॥ टेक ॥ चंद सूर नहिं राति दिवस नहिं धरनि आकास न भाई ॥ करम अकरम नहीं सुभ असुभ नही का कहि देहु बड़ाई ॥१ ॥ सीत न ऊसन वायु नहीं सरवत काम कुटिल नहीं होई ॥

जोग न भोग रोग नहीं जा कै कहों नांव सति सोई ॥२ ॥ निरंजन निराकार निरलेपहि निरबिकार निरासी ॥ काम कुटिलता ता ही कहि गावै हर हर आवै हांसी ॥३ ॥ गगन धूर धूप नहिं जा के पवन पूर नहीं पाणी ॥ गुन बिगुन कहियत नहीं जा कै कहो तुम बात सयानी ॥४ ॥ याही सौ तुम जोग कहत हौ जब लग आस की पासी ॥ छूटे तबही जब मिलै एक ही भणै रविदास उदासी ॥५ ॥

शब्द - 75

नरहरि चंचल है मति मोरी कैसे भगति करुँ मैं तोरी ॥टेक ॥ तूँ मोहिं देखै मैं तोहि देखूँ प्रीति परस्पर होई ॥१ ॥ तूँ मोहिं देखै हऊं तोहि न देखूँ ऐहु मति सब बुधि खोई ॥२ ॥ सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देखत हूँ नहीं जाना ॥ गुन सब तोर मोरि सब औगुन कृित उपकार न माना ॥३ ॥ मैं तो तोरि मोरी असमझिस कैसे करि निसतारा ॥ कहि रविदास माधो करुणामय जै जै जगत अधारा ॥४ ॥

शब्द - 76

तब राम नाम कहि गावैगा॥ रारंकार रहित सभहिन में अंतरि मेल मिलावैगा।टेक॥ लोहा कंचन सम कर देखै भेद अभेद समावैगा॥ जो सुख होवै पारस के परसे सो सुख वा को आवैगा॥१॥ गुर प्रसादि भई अनुभैमति विष अमृत सम ध्यावैगा॥२॥ कहै रविदास मेटि आपा पर तब वा ठौरहि पावैगा॥३॥

शब्द - 77

संतो अनिन भगति यह नाहीं॥ जब लग सत-रज-तम तीनो गुन बियापत है या माहीं॥ टेक॥ सोई आन अंतर करै हरि सों अपमारग को आनै। काम क्रोध मद लोभ मोह की पल पल पूजा ठानै॥१॥ सकित सनेह इष्ट अंग लावै अस्थल अस्थल खेलै। जो कछु मिलै आन अखत जियो सुत दारा सिर मेलै॥२॥ हरिजन हरि बिनु और न जानै तजै आन सभ तियागी। कहि

रविदास सोई जन निर्मल निसिदिन निज अनुरागी ॥३ ॥

शब्द - 78

भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई । आई भगति तऊ गई बडाई ॥ टेक॥ कहा भयो नाचे अरु गाये कहा भयो तप कीन्हे । कहा भयो जो चरन पखारे जौ लो तत्त नहीं चीन्हें ॥१ ॥ कहा भयो जे मूंड मुंडायौ बहु तीरथ ब्रत कीन्हे । स्वामी दास भगत अरु सेवक काहू परम तत्त नहीं चीन्हें ॥२ ॥ कहै 'रविदास' तेरी भगति दूर है भाग बडै सो पावै। तजि अभिमान मेटि आपा पर पिपलक ह्वै चुनि खावै ॥३ ॥

शब्द - 79

अब कछु मरम बिचारा हो हरि। आदि अंत औसान राम बिन कोय न करै निसतारा हो हरि।टेक ॥ जल ते पंक पंक ते अमृितजल जलहि सुध होइ जैसे। ऐसे भरम करम जीय बांधियो छूटैं तुम बिन कैसे हो हरि ॥१ ॥ जप तप

बिधी निषेध नाम करूणामै पाप पुन्न दोऊ माया। ऐसे मोहित मन गति बिमुख धन जनम जनम डँहकाया हो हरि॥२॥ताड़न छेदन त्राछन खेदन बहु बिधि करि ले उपाई। लुणखड़ी संजोग बिना जैसे कनिक कलंक न जाई हो हरि॥३॥ कहि रविदास उदास ताही तैं कहा उपाय अब कीजै। भै बूड़त भैभीत भगति जन करि अवलंबन दीजै हो हरि॥४॥

शब्द - 80

नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो दीना नाथ दयाल॥ टेक॥ जनमत ही ते हो बिगरान । अब कछू बूजत बहुरि सियान ॥१॥ परिवार बिमुख मोहि लाग। कछु समुझि परत नहिं जानि ॥२॥ यह भौ बिदेस कलि काल। हम आन परियो जमजाल॥३॥ कबहुक तोर भरोस । जो मैं न कहुँ तो मोर दोस ॥४॥ अस कहियत हू मैं अजान। प्रभु तुम सर्वज्ञ सयान॥५॥ सुत सेवक सदा असोच। ठाकर पितहिं सब सोच ॥६॥ रविदास बिनवै कर जोरि अहो

सुआमी तुम मोहिं न छोरि ॥७॥ सुतौ पुरबला अकरम मोर। बलि जाऊँ करौ निज कोर ॥८॥

शब्द - 81

ज्यो तुम कारन केसवे लालच जिव लागा। निकट नाथ प्रापत नहीं मति मंद अभागा॥ टेक॥ सागर सलिल सरोदिका जल थल अधि काई॥ स्वाती बूंद की आस है पिउ पियास न जाई॥१॥ जो रे सनेही चाहीए चितवत हो दूरी। पंगुल फल न पहुँच ही कछु साध न पूरी॥२॥ कहै रविदास अकथ कथा उपनिषद् सुनीजै। जस तूँ तस तूँ ही कस उपमा दीजै॥

शब्द - 82

गोबिंदे भौजल बियाधि अपारा। ता तै कछु सूझत वार न पारा॥ टेक॥ अगम ग्रेह दूर दूरन्तर बोलि भरोस दीजै। तेरी भगति परोहन सन्त अरोहन मोहिं

चढ़ाई किन लीजै ॥१ ॥ लोह की नाव पखानन बोझी सुकिरित भाव बिहीना। लोभ तरंग मोह भयों गालौ मन मीन भयो जन लीना ॥२ ॥ तुम दीना नाथ दयाल दमोदर कीनै हेत बिलंब कीजै। रविदास दास सन्त चरन मोहि अवलंबन दीजै ॥३ ॥

शब्द - 83

आगै मंदा हवै रहया परकिरति न जाई ॥ कूकर चौकी चहोडियै फिरि बहे सु भाई ॥टेक ॥ सुरसरी मै जु सुरा परयौ को करै न बिचार ॥ राम नाम हिरदै बसै सब सुख निधि सार ॥१ ॥ कहै रविदास सुंनि केसवे अंतह करन बिचार ॥ तुम्हारी भगति कै कारनै फिरि हवै हो चमार ॥२ ॥

राग रामकली, चउपदा

शब्द - 84

धृिग धृिग जीवणु राजे राम बिना ।। टेक ।। देहि नैन बिनु, चंद रैन बिनु, ज्यों

मीना गहरु जले बिना। हसती सुंड बिनु, पंखी पंख बिनु, जैसे मन्दिर दीप बिना।।१ ।। जैसे ब्राह्मण वेद विहूणा, तैसो प्राणी तुझ नाम बिना।। बेसबा, कूं सुत काकौ कहीए, तैसो भगत जन राम बिना।।२ ।। मंतर सुरति बिनु, नारी कंत बिनु, जैसो धरती इन्द्र बिना। ज्यों ब्रिच्छा फलहिं विहूणा, त्यों प्राणी तुझ प्रेम बिना।।३ ।। काम क्रोध हंकार निबारउ, तृष्ना त्यागहु संत जना। कहि रविदास भई सीतल काया, ज्यों हौं लागो गुर चरना।।४ ।।

रागु मारु

शब्द - 85

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥ गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै॥१ ॥ रहाउ॥ जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै॥ नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥१ ॥ नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै॥ कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै॥२ ॥१ ॥

शब्द - 86

सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जाके रे ॥ चारि पदारथ असट महा सिधि नवनिधि करतल ता कै ॥१ ॥ हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ अवर सभ छाडि बचन रचना ॥१ ॥ रहाउ ॥ नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२ ॥ सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी । कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥३ ॥२ ॥

राग मारू (चौपदे)

शब्द - 87

पीआ राम रसु पीआ रे ।टेक ॥ भरि भरि देवै सुरति कलाली दरिया दरिया पीना रे । पीवत पीवतु आपा जग भुला हरि रस मांहि बौराना रे ॥१ ॥ दर घरि विसरि गयो रविदासा उनमनि सद मतवारी रे । पलु पलु प्रेम पियाला चालै,

छूटे नांहि खुमारी रे ॥२ ॥

शब्द - ४४

मन मोरा माया महि लपटानो ।। टेक ।। बिसासक्त रहियो निसवासर, अजहूँ नहिं अघानो। कामी कुटिल लबार कुचाली, समझयि नहीं समुझानो ।।१ ।। सतिसंगत पलु नहीं कीन्ही, मन मूरखि बहु गरवानो। सोत खात दिन रैन बितायि, ताहि मैं रसना सुख मानो ।।२ ।। माया मंहि हिल मिलि रहियो, फोकट साटे जनम गंवानो। कहि रविदास कछु चेत बाबरे, राम नाम विन नहि उबरानो ।।३ ।।

शब्द - ४९

बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा ॥ टेक ॥ सेत भयो तन थर थर कंपहि, हरि सिमरनु नहीं कीन्हा। सत संगति नहिं गुर पद सेऊ प्रभ कीरति नहिं गाई ॥१ ।नहि मनु रमयो प्रभ चरनन महिं, तन सिऊं पीरीत द्रिडाई। कहि रविदास चलन

की बरिया, कोउ न होय सहाई ॥२ ॥

शब्द - 90

प्रभु जी तुम औगुन बखशणहार। हऊं बहु नीच उधरौ पातकी, मूरखि निपट गंवार ॥टेक ॥ मो सम पतित अधम नहीं कोऊ खीन दुखी विसियार। नाम सुनहि नरकु भजै ह्वै, तुम बिन कवन हमार ॥१ ॥ पतित पावन विड़द तिहारौ आयि परौं तोहि दुआर। कहि रविदास ऐहु मन आसा निज कर लेहु उभार ॥२ ॥

राग केदारा

शब्द - 91

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥१ ॥ रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥ किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥१ ॥ रहाउ ॥ सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु ॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि

लोक प्रवेस॥२॥ अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास॥ ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास॥३॥१॥

शब्द - 92

रे मन राम नाम संभारि। माया कै भ्रम कहा भूल्यौ, जाहिगे कर झारि।। टेक।। देखि धौं इहां कौण तेरो, सगा सुत नहिं सार। तोरि तंग सब दूरि करिहै, दैहिंगे तन जारि।।१।। प्रान गये कहो कौण तेरा, देखि सोच बिचारि। बहुरि येहि कलि काल माही, जीति भावै हारि।।२।। यह माया सब थोथरी रे, भगति को प्रतिपारि। कहि रविदास सति बचन गुर कै, सो न जीअ तै बिसारि।।३।।

शब्द - 93

हो बनिजारौ राम को, हरि जू को टांडो लादो जायि रे। राम नाम धन पायो, ता ते सहज करूँ व्योपार रे।। टेक।। औघट घाट घनो घना रे, निरगुन बैल

हमार रे। राम नाम हम लादि्यो, ताथै बिष लादि्यो संसार रे।।१ ।। अनतहिं धन धर्‌यो रे, अनतहिं ढूँढ़न जायि रे। अनत को धरयो न पाइये, ताथै चाल्यो मूल गमाई रे।।२ ।। रैन गँवाई सोइ करि, दिवस गँवायो खाइ रे। हीरा यह तन पायि करि, कौड़ी बदले जायि रे।।३ ।। साधु संगति पूँजी भई रे, बसुत लई निर्मोल रे। सहजै बलदिया लादि करि चहुं दिसि टाँडो मेलि रे।।४ ।। जैसा रंग कसुंभ का, तैसा यहु संसार रे। रमइया रंग मजीठ का, भणै रविदास बिचार रे।।५ ।।

शब्द - 94

प्रीति सुधामनि आव। तेज सरूपी सकल सिरोमनि, अलख निरंजन राव।टेक।। पीव संग प्रेम कबहुँ नहि पायो, करनी कवन बिसारी। चक को ध्यान दधि सुत सो होत है, यों तुम तै मैं न्यारी।।१ ।। भोर भयौ मोहिं इक टक जोवत, तलफल रजनी जाई। पीव बिन सेजइ का सुख सोऊँ, बिरह बिथा तन

खाई ॥२ ॥ मेटि दुहाग सुहागिन कीजै, अपने अंग लगाई। कहै रविदास प्रभु तुमहरे बिछोहे, एक पलक जुग जाई ॥३ ॥

राग भैरउ

शब्द - 95

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ बरन सहित जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल निहकामु ॥१ ॥ परचै रामु रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१ ॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइ सु अनभै रहै ॥२ ॥ फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३ ॥ घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥ जीवत मुकत सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४ ॥१ ॥

शब्द - 96

ऐसा ध्यान धरौं बनवारी। मन पवन दिड़ि सुखमन नाडी।टेक॥ सोई जपु जपौं जो बहुरि न जपना। सोई तपु तपौं जो बहुरि न तपना॥१॥ सोई गुरु करौ जो बहुरि न करना। ऐसी मरौं जो बहुरि न मरना॥२॥ उलटी गंग जमुन में लयावो। बिनही जल मजन ह्वै आवौं॥३॥ लोचन भरि भरि बियंब निहारौं। जोति बिचारि न और बिचारौं॥४॥ पिंड परे जीव जिस घरि जाता। शबद अतीत अनाहद राता॥५॥ जा पर किरपा सोई भल जानै। गूंगौ साकर कहा बखानै॥६॥ सुन्न मण्डल में तेरा बासा। ताथै जाव में रहौं उदासा॥७॥ कह रविदास निरंजन ध्याउ, जिस घरि जाओ हौ बहुरि न आउ॥८॥

शब्द - 97

अबिगति नाथ निरंजन देवा। मैं का जानूं तुम्हारी सेवा।टेक॥ बाँधू न बंधन छांऊ न छाया। तुमहीं सेऊं निरंजन राया॥१॥ चरन पताल सीस असमाना।

सो ठाकुर कैसे संपुट समाना ॥२ ॥ सिव सनकादिक अंत न पाया। ब्रह्म खोजत जनम गंवाया ॥३ ॥ तोडूँ न पाती पूजूँ न देवा। सहज समाधि करूँ हरि सेवा ॥४ ॥ नख प्रसेद जा के सुरसरि धारा। रोमावली अठारह भारा ॥५ ॥ चारो बेद जा के सुमिरत सांसा। भगति हेत गावै रविदासा ॥६ ॥

शब्द - 98

भेष लियो पै भेद न जान्यो। अमृत लेयि विषै सो मान्यो ।टेक ॥ काम क्रोध में जनम गंवायो। साधु संगति मिलि राम न गायो ॥१ ॥ तिलक दियो पै तपनि न जाई। माला पहिर घनेरी लाई ॥२ ॥ कहै रविदास मरम जो पाऊँ। देव निरंजन सत कर ध्याऊं ॥३ ॥

शब्द - 99

गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं। ढूंढै कोउ षट सासत्रन मंहि, किंधू को वेद वशानै ।। टेक ।। सांस उसांस चढ़ावै बहु विधि, बैठहिं सुंनि समाधी। फांटियो

कानु भभूत तनि लाई, अनिक भरमत वैरागी।।१।। तीरथ बरत करयि बहुतेरे, कथा बसत बहु सानै। कहि रविदास मिलियौ गुर पूरे, जिहि अंतर हरि मिलानै।।२।।

राग बसंतु

शब्द - 100

तुझहि सुझंता कछू नाहि॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि॥ गरबवती का नाही ठाउ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ॥१॥ तू कांइ गरबहि बावली॥ जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली॥१॥ रहाउ॥ जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु॥ तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु॥ अप तन का जो करे बीचारु॥ तिसु नही जमकंकुरु करे खुआरु॥२॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ॥३॥ साधू की जउ लेहि ओट॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि॥

कहि रविदास जो जपै नामु॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु॥४॥६॥

राग मलार

शब्द - 101

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥१॥ रहाउ॥ सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥१॥ तर तारि अपवित्र कर मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं॥२॥ मेरी जाति कुटबांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आसा पासा॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा॥३॥१॥

शब्द - 102

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलासपति तास सम तुलि नही आन कोऊ॥

एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखिऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥१ ॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२ ॥ जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर दोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३ ॥१ ॥

शब्द - 103

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥१ ॥ जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ झूठे बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥२ ॥ कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥ जोई जोई कीनो सोई सोई

देखिओ ॥३ ॥१ ॥३ ॥

राग आसावरी

शब्द - 104

केसवे विकट माया तोर ताते बिकल गति मोर ।टेक ॥ सुबिश डसन कराल अहिमुख ग्रसति सुदृिड सु मेश । निरूखि माखी बखत बियाकुल लोभ काल ना देख ॥१ ॥ इंद्रियादिक दुख दारन असंख्यादिक पाप । तोहि भजत रघुनाथ अंतरि ताहि त्रास ना ताप ॥२ ॥ प्रतिज्ञा प्रतिपाल चहुँ जुगि भगति पुरवन काम । आस मोहि भरोस है रविदास जै जै राम ॥३ ॥

शब्द - 105

रामहि पूजा कहा चढ़ाऊँ ॥ फल अरु फूल अनुपम न पाऊँ ।टेक ॥ थनहर दूध जो बच्छरु जुठारओ ॥ पुहुप भंवर जल मीन बिटारिओ ॥१ ॥ मलियागिर बेडिओ भुअंगा । विष अमृत दोऊ एकै संगा ॥२ ॥ धूप दीप नईबेदहि बासा ।

कैसे पूज करहि तेरी दासा॥ मनही पूजा मनही धूप। मनही सेऊँ सहज सरूप॥३॥ पूजा अरचा न जानूँ तेरी॥ कहै रविदास कवन गति मेरी॥४॥

शब्द - 106

बरजि हो बरजि बीठुले माया जग खाया॥ महाप्रबल सब ही बस कीये, सुर नर मुनि भरमाया॥ टेक॥ बालक बिरध तरुन अति सुन्दर, नाना भेस बनावै। जोगी जती तपी सन्यासी, पंडित रहिन न पावै॥१॥ बाजीगर की बाजी कारनि सब को कौतिग आवै। जो देखै सो भुलि रहै वाका चेला मरम जो पावै॥२॥ खंड ब्रह्मण्ड लोक सभ जीते, ऐहि बिधि तेज जनावै। सिअंभू का चित चौर लियो है, वा कै पाछै लागा धावै॥३॥ इन बातन सुखचैन मरियत है, सब को रहे उझारी। नेक दृिश्ट किन राखो कैसो, मेटो बिपति हमारी॥४॥ कहै 'रविदास' उदास भयो मन, भाजि कहाँ अब जयीये। इत उत तुम गोबिन्द गुसाईं तुमहीं मांहि समैये॥५॥

शब्द - 107

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु। पान करत पायो पायो रमइया धन।टेक॥ संपति बिपति पटल माया धन। ता महिं मगन न होत तेरो जन॥१॥ कहा भयो जे गत तन छिन-छिन। प्रेम जाइ तो जरपै तेरो निज जन॥२॥ प्रेम रज लै राखो रिदै धरि॥ कहै रविदास छूटिबो कवन परि॥३॥

शब्द - 108

बंदे जानि साहिब गनी। समझि बेद कतेब बोलै काबे में किया मनी।टेक॥ ज्वानी दुनी जमाल सूरति देखिए थिरि नाहिं वे। दम छ सै सहंस इक्कीस हर दिन खजाने थैं जाहिं वे॥१॥ मनी मारे गर्ब 'गाफिल' बेमेहर बेपीर वे। दरी खाने परत चोबा होत नहीं तकसीर वे॥२॥ स्याही सपेदी तुरँगी नाना रंग बिसाल वे। नापैद तैं पैदा कीया पैमाल करत न बार वे॥१॥ कुछु गाँठि खरची मिहर तोसा खैर खूबी हाथि वे। धनी का फुरमान आया तब कीया

चालै साथ वे ॥४ ॥ तजि बदजवां बेनजर कमदिलां करि खसम की कान वे। रविदास की अरदास सुण कछु हक हलाल पछाण वे ॥५ ॥

शब्द - 109

सु कछु बिचारियो ताथे मेरो मनु थिरु ह्वै रहियो ॥ हरि रंग लागो ताथै मेरो बरन पलटि भयो ॥टेक ॥ धन्न सो पंथी पंथ चलावा। अगम गवन में गम दिखलावा ॥१ ॥ अबरन बरन कथै जिन कोई। घट घट बियापि रहियो हरि सोई ॥२ ॥ जिहि पद सुन नर प्रेम पियासा। सो पद राम रहियो रविदासा ॥३ ॥

शब्द - 110

भाई रे सहज बन्दो सोई बिन सहज सिद्धि न होई। नयौलीन मन जो जानिये जब कीट भृङ्गी होई ॥टेक ॥ आपा पर चीन्हें नहीं रे और को उपदेश। कहां ते तुम आयो रे भाई जाहूगे कित देस ॥१ ॥ कहिये तो कहिये का कहि कहीये कहाँ न को पतियाइ। रविदास दास अजान ह्वै करि रहियो सहज समाइ ॥२ ॥

शब्द - 111

देहु कलाली एक पियाला। ऐसा अबधू होई मतवाला।टेक ॥ कहै कलाली पियाला देऊ। पीवन हारे का सिर लेऊ॥१ ॥ ऐरी कलाली तैं क्या किया। सिर के साटै पियाला दिया॥ सिर कै साटै महिंगा भारी। पीवेगा अपना सिर डारी॥२ ॥ चंद सूर दोउ सनमुख होई। पीवै पियाला मरै न कोई॥३ ॥ सहज सुन्न में भाठी स्त्रवै। पीवै रविदास गुरमुख द्रवै॥४ ॥

शब्द - 112

ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं ॥ हिरदे राम गोबिंद गुन सारं।टेक ॥ सुरसरि जल लीया कृत बारुनी रे जैसे संत जन नाहिं करत पानं। सुरा अपवित्र निति गंगजल मानिये सुरसरि मिलत नहिं होत आनं॥१ ॥ तर तारि अपवित्र कर मानिये जैसे कागरा करत बिचारं। भगवत भगवंत जब ऊपरे लिखिये तब पूजिये करि नमस्कारं॥२ ॥ अनेक अधम जिब नाम सुनि ऊधरे पतित पावन

भये परसि सारं। भनत रविदास रंरकार गुन गाबंत संत साधु भये सहज पारं ॥३ ॥

शब्द - 113

पार गया चाहै सभ कोई दोहू उरवार पार नहि होई ॥ टेक ॥ पार कहै उरवार सो पारा बिन पद परचे भ्रमै गंवारा ॥१ ॥ पार परमपद मांझि मुरारी ता में आप रमैं बनवारी ॥२ ॥ पूरन ब्रह्म बसै सभ ठांई कहै रविदास मिलै सुख सांई ॥३ ॥

शब्द - 114

सतगुर हमहु लखाई बाट। जनम पाछले पाप नसाने, मिटेगौ सभु संताप।। टेक।। बाहर खोजत जनम गंवाए, उनमनि ध्यान रहे घट आप। शबद अनाहद बाजत घट मंहि, अगम ग्यान भौ गुर प्रताप।।१ ।। धन दारा मंहि रहियो मगन नित, गुणियो न मिचु कौ चाप।। कहि रविदास गुरु राह दिखावै, तृिछा बुझि मिटि मन संताप।।२ ।।

शब्द - 115

बापुरो सत रविदास कहै रे। गियान बिचार चरन चित लावै हरि की सरनि रहै रे।टेक॥ पाती तोड़े पूजि रचावै तारन तिरन कहै रे। मूरति माहिं बसै परमेशर तौ पानी माहिं तिरै रे॥१॥ त्रिबिध संसार कवन बिधि तिरबौ जे दृिड नाव न गहे रे। नाम छाडिने डांडे बैसे तौ दूना दुःख सहे रे॥२॥ गुरु को सबद अरु सुरति कुदाली खोदत कोई लहै रे। राम कहहु कै बाटै न आयो सो नेकु लबहै रे॥३॥ झूठी माया जग डहकाया तौ तिन ताप दहै रे। कहै रविदास राम जप रसना माया काहू के संग न रहै रे॥४॥

शब्द -116

ऐ अंदेस सोच यिह मेरे । निसिवासर गुन गाऊँ तेरे।टेक॥ तुम चितंत मेरी चिंतहु जाई। तुम चिंतामनि होय कि नाई॥१॥ भगति हेत तुम कहा कहा नहिं कीन्हा। हमरी बेर भये बलहीना॥२॥ कहै रविदास दास अपराधी। जेहि तुम

द्रवो मैं भगति न साधी ॥३ ॥

शब्द - 117

बौरी करिलै राम सनेहा। संग सहेली वियाह चली सब, छांडि नैहरि रा गेहा।। टेक।। खेल खिलार बइस सभ बीती, मन चित भज न पिउ परतीती। मैं मैं जौ लौं गर्भ बौरानी, तौ लौं पियारा मनु नहिं आनी।।१।। आपा मेटि मैं मेरी खोही, गरब तियागी अरपिहि निज देही। पिउ कौ नारी उहि मन आई, जिहि अभि अंतर अवरु नहिं काई।।२।। जौ लौं पियारा मन नहिं आई, का सोरह शिंगार बनाई।। सोइ सती रविदास बखानी, तन मन सिऊं पिउ रंग समानी।।३।।

शब्द - 118

रे मन मांछला संसार समुंदे, तूँ चित्र बिचित्र बिचार रे। जिहिं गाले गलियाहीं मरीये, सो संग दूरि निवारि रे।। टेक।। यम है डिगणि डोरि है कंकण, पर

तिय गालौ जाणि रे। ह्वै रस लुबुध रमे यौं मूरख, मन पछितावे नियांणि रे।।१।। पाप गुनियो छै धरम निबौली, तूँ देखि देखि फल चाखि रे। परतिरिया संग भलौ जौं होवै, तो राणौ रावन देखि रे।।२।। कहै रविदास रतन फल कारनि, गोबिंद कै गुन गाइ रे। कांचौ कुंभ भरियो जल जैसे, दिन दिन घटतौ जाइ रे।।३।।

शब्द - 119

रथ को चतुर चलावनहारो। खिन हाँकै खिन ऊभौ राखै नहीं आन कौ सारो।टेक॥ जब रथ रहे सारथी थाकै तबको रथहि चलावै। नाद बिंद सबै ही थाकै मन मंगल नहि गावै॥१॥ पाँच तत्त को यहू रथ साज्यो अरधै उरध निवासा। चरन कमल लियो लाइ रह्यो है गुन गावै रविदासा॥२॥

शब्द - 120

जो तुम तोरो राम मै नहिं तोरौं। तुम सों तोरि कवन सौ जोरौ।।टेक।। तीरथ बरत न करौ अंदेसा। तुम्हरे चरन कमल का भरोसा।।१।। जहँ जहँ जाओं तुम्हारी पूजा। तुम सा देव अवर नहिं दूजा।।२।। मैं अपनो मन हरि सो जोरियो। हरि सो जोरि सबन से तोरियो।।३।। सब पर हरि तुमारी आसा। मन क्रम बचन कहै रविदासा।।४।।

शब्द - 121

केहि बिधि अब सुमिरौ रे अति दुलभ दीन दयाल।। मैं महा विषई अधिक आतुर कामना की झाल।।टेक।। कहां डिंब बाहर कीये हरि कनक कसौटी हार।। बाहर भीतर साखि तूँ हौ कीयो सु सौ अंधियार।।१।। कहा भयो बहुत पाखंड कीये हरि हिरदै सपने न जान।। जो दारा बिभिचारिनी मुखि पतिबरता जिय आन।।२।। मैं हिरदै हारि बैठयो हरि मो पै सरयो न एको काज।। भाव भगति रविदास दे प्रतिपाल करो मोहि आज।।३।।

शब्द - 122

अब कैसे छूटै नाम रट लागी।टेक॥ प्रभु जी तुम चंदन हम पानी॥ जाकी अंग अंग बास समानी॥१॥ प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा॥ जैसे चितवत चंद चकोरा॥२॥ प्रभुजी तुम दीपक हम बाती॥ जा की जोति बरै दिन राती॥३॥ प्रभु जी तुम मोती हम धागा॥ जैसे सोनहिं मिलत सुहागा॥४॥ प्रभु जी तुम सुआमी हम दासा॥ ऐसी भगति करै रविदासा॥५॥

शब्द - 123

माधो भ्रम कैसे न बिलाई॥ ताथैं दुती दरसै आई॥ टेक॥ कनक कुटक सूत पट जुदा रजु भुअंग भ्रम जैसा॥ जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यों, ब्रह्म जीव दुति ऐसा॥१॥ बिमल एक रस उपजै न बिनसै, उदय अस्त दोऊ नाहीं॥ बिगता बिगत घटै नहिं कबहुँ, बसत बसै सभ माहीं॥२॥ निस्चल निराकार अज अनुपम, निरभय गति गोबिन्दा॥ अगम अगोचर अच्छर अतरक निर्गुण अंत

अनंदा ॥३ ॥ सदा अतीत गियान घन बरजित निरबिकार अबिनासी ॥ कहै रविदास सहज सुन्न सत, जीवन मुक्त निधि कासी ॥४ ॥

शब्द - 124

मन मेरो सत सरूप बिचारं ॥ आदि अंत अनंत परम पद संसा सकल निवारं ॥ टेक ॥ जस हरि कहीये तस हरि नांही है अस जस कछु तैसा ॥ जानत जानत जान रह्यो मन मरम कहो निज कैसा ॥१ ॥ कहियत आन अनुभवत आन रस मिलै न बिगर होई ॥ बाहर भीतर प्रगट गुप्त घट घट प्रति अवर न कोई ॥२ ॥ आदहु एक अंत फुनि सोई मध्य उपाधि सु कैसे ॥ अहै एक पै भ्रम से दूजो कनक अंलकृत जैसे ॥३ ॥ कहै रविदास प्रकाश परम पद का जप तप ब्रत पूजा ॥ एक अनेक अनेक एक हरि कहौ कौण बिधि दूजा ॥४ ॥

शब्द - 125

थोथो जनि सोई पछोरो रे कोई। पछोरो जा मे निज कन होई ॥टेक ॥ थोथी

काया थोथी माया। थोथा हरि बिन जनम गंवाया॥१॥ थोथा पंडित थोथी बानी। थोथी हरि बिन सबै कहानी॥२॥ थोथा मंदिर भोग बिलासा। थोथी आन देव की आसा॥३॥ साचा सुमिरन नाम बिसासा। मन बच करम कहै रविदासा॥४॥

शब्द - 126

माधौ ! मोहि एकु सहारौ तोरा।। टेक।। तुमहि मात पिता प्रभ मेरो, हौं मसकीन अति भोरा। तुम जउ तजो कवन मोहि राखे, सहिहै कौनु निहोरा।।१।। बाहाडंबर हौं कबहुं न जान्यौ, तुम चरनन चित मोरा। अगुन सगुन दौ समकरि आन्यौ, चहुँ दिस दरसन तोरा।।२।। पारस मनि मुहि रतु नहिं, जग जंजार न थोरा। कहि रविदास तजि सभ तृष्णा, इकु राम चरन चित मोरा।।३।।

राग टोडी

शब्द - 127

पावन जस माधो तोरा। तुम दारुन अघमोचन मोरा।टेक॥ कीरति तेरी पाप बिनासे लोक बेद यों गावै। जौं हम पाप करत नहिं भूधर तौ तूँ कहा नसावै॥१॥ जब लग अंग पंक नहिं परसै तौं जल कहा पखालै। मन मलीन विषया रस लंपट तौं हरि नाम संभालै॥२॥ जो हम बिमल हिरदै चित अंतरि दोस कौन पर धरिहौ। कहि रविदास प्रभु तुम दयाल हौ अबंध मुक्ति का करिहौ॥३॥

राग सारंग

शब्द - 128

जग में वेद बैद मनीजै। इन में अवर अगम कछु औरे कहौ कवन परि कीजै।टेक॥ भौजल बियाधि असाधि प्रबल अति परम पंथ न गहीजै॥१॥ पढ़ै सुणै कछु समुझि न परई अनुभै पद न लहीजै॥२॥ चख बिहुन कतार चलतु है तिनहु अंस भुज दीजै॥३॥ कहै रविदास बमेक तत बिनु सब मिलि गरत परीजै॥४॥

शब्द - 129

तुम करहु कृपा मोहि सांई।। टेक।। स्वास स्वास तुझ नाम संभारूँ, तुमहि भेंटि ममु मन हरसाई। तुमहु दयाल कृपाल करुणानिध तुम्हहि दीनबंध रघुराई।।१।। तुम्हारी सरन रहों निसवासर, भरमत फिरौं न हौं हरि राई। तुम्हारी अनुकमप मान मदु छुटै, राम रसायन अमृत पाई।।२।। ऐसो बधु जाचिहुं करुनामैं, तुझ चरन तजि कितहु न जाई। चरण सरण रविदास राबरी, अपनो जान लेहु उर लाई।।३।।

शब्द - 130

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ।टेक॥ गुर की साटि ज्ञान का अच्छर बिसरै तों सहज समाधि लगाऊँ॥१॥ प्रेम पाटी सुरति लेखनि करिहौ ररा ममा

लिखि आंक दिखाऊ॥२॥ येह बिधि मुक्त भये सनकादिक रिदै बिदारि प्रकाश दिखाऊँ॥३॥ कागद कँवल मति मसि करि निर्मल बिन रसना निस दिन गुण गाऊँ॥४॥ कहै रविदास राम जपि भाई संत साखि दे बहुरि न आऊँ॥५॥

शब्द - 131

हरि सिमरै सोई संत बिचारौ। अवरु जनम बेकाम राम बिन, कोटि जनम सौं उपरि बारौ।। टेक।। हरि पद बिमुख कुटिल मायारत, राम चरण चितहु न सानै। जिन मन मानु हउमैं बसहि, तिह जन संत कहौ किम मानै।।१।। कपट डंभ पर निंदा बूड़ौ, संत जनम भौ किलविष कारी। ज्यों बरिया रुत बूंद उदधि मंहि आई, मिलै सोई जल खारौ।। २।। ता परसंगि सीप स्वाति नछत्र, मोती निपजत नीर तै न्यारौ। कहि रविदास मोह मद त्यागो, राम चरण मन संत बिचारौ।।२।।

राग जैश्री

शब्द - 132

सब कुछ करत न कहौं कुछ कैसे। गुन निधि बहुत रहत सम जैसे।।टेक।। दरपन गगन अनील अलेप जस। गंग जलधि प्रतिबिंब देखि तस।।१।। सब आरंभ अकाम अनेहा। बिधी निखेध कीयो अनेकेहा।।२।। इहे पद कहत सुनत नहीं आवै। कहै रविदास सुकृति कै पावै।।३।।

राग कानडा (दोपाद)

शब्द - 133

जा कै राम जी धनी ता कै काहि की कमी है। मनसा को नाथ मनोरथ पुरबै सुख निधान की काहा गनी है।।१।। कवन काज किरपन की माया करत फिरत अपनी अपनी है।। खायी न साकै खरच नहि जावै, ज्यों भुयंग सिर रहत मनी है।।२।। जा की रासि थावर नहि आवै, राहा केतकी मुक्त अनी है।।

रखवारे को चक्र सुदर्शन, विघन न ब्यापै रोक छिनी है ॥३ ॥ सिव सनकादिक पार न पावै, मैं बपुरै की कौन गिनी है ॥ जा की प्रीत निरंतरि हरि सो, कहै रविदास ताकी सदा बनी है ॥४ ॥

शब्द - 134

भगति न होय रे न होई, जब लग तन सुध न होय ।। टेक ।। भगति नहीं नांचै अरु गावै, भगति न बहु तप कीन्हा । भगति नहीं स्वामी अरु सेबग, जब लग परम तत्त नहीं चीन्हा ।।१ ।। भगति न ज्ञान जोग बैरागै, भगति न कहै कहावैं । भगति न सुनि मण्डल घर सोधै, भगति न कछु दिखावैं ।।२ ।। जहां जहां जायि तहां तहां बंधन, त्रिविध ताप न जाई । कहै रविदास तबै सचु पावै, आपा उलटि समाई ।।३ ।।

शब्द - 135

रे पायो रे राम आमी रस ॥ टेक ॥ रस जिनि मगन ह्वै रहिया, ररंकार राषे नित रसना। इहु रस पीब राम रस बूड़ौ, आपु मगन रहि ह्वै दिन रैना ॥१ ॥ लोक रस लागि विषै विष देही, भणों राम भौजल नहीं बहना। अभि अंतर भजौ निज अविगत, ऐह उपाइ अतिंर भौ तरना ॥२ ॥ चिन्तामणि लाल हाथै जै चढ़िय हुवौ उजाम तिमिर नहीं रहना। भजै रविदास राम नित रसना, दुलभ जनम बिरथ नहीं गवना ॥३ ॥

शब्द - 136

देखि मूरखता यहु मन की। राम नाम कू छाडि अधारौ, गहि ओट छुद त्रिन की ।। टेक ।। अभि अंतर रामु नहिं जान्यौ, छानहु धूरि बन बन की। जा दिन ऐह हंसा उरि जाये है, छोरि ठठरिया तन की। धनु दारा महि रहहु लपटानो, आपहु नहिं सुधि वा छन की ।।१ ।। जन रविदास तियागी जग आसा, लहहु ओट हरि चरनन की ।।२ ।।

आरती

शब्द - 137

आरती कहाँ लैं कर जोवै। सेवक दास अचंभो होवै॥ टेक॥ बावन कंचन दीप धरावै। जड़ बैराग रे दृस्टि न आवै॥१॥ कोटि भानु जा की सोभा रोमै। कहा आरती अगनी होमै॥२॥ पाँच तत यह तिरगुनी माया। जो देखै सो सकल उपाया॥३॥ कहै रविदास देखा हम माहीं। सकल जोति रोम सम नाहीं॥४॥

शब्द - 138

संत उतारै आरती देव सिरोमनीये॥ उर अंतर तहाँ पैसि बिन रसना भणिये॥ टेक॥ मनसा मंदिर माहिं धूप धुपइये॥ प्रेम प्रीति की माल राम चढ़इये॥१॥ चहु दिसि दिबला बालि जगमग ह्वै रहियो रे॥ जोति जोति सम जोति जोति

मिल रहियो रे ॥२ ॥ तन मन आतम बारि सदा हरि गइये ॥ भनत जन रविदास तुम सरना आइये ॥३ ॥

शब्द - 139

गगन मंडल में आरती कीजै, नाद बिंद इके मेक करीजै। सुसमन इंदु अमृत कुंभ धरावै, मनसा माला फूल चढ़ावै ॥१ ॥ घीव अखंडा सोहै बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती। पवन साधना थाल सजीजै, तामें चौमुख मन धरि लीजै ॥२ ॥ रवि ससि हाथ गहौं तिंह माहीं, खिन दहिने खिन बामैं लाहीं। सहस कंवल सिघासन राजै, अनहद झांजन नित ही बाजै ॥३ ॥ इंह बिध आरती सांची सेवा, परम पुरिख अलख अभेवा। कहै रविदास गुरदेव बतावै, ऐसी आरती पार लंघावै ॥४ ॥

शब्द - 140

आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव रुप घनेरो ॥टेक ॥ अजर अमर

अडोल अभेस, निरगुन रहित रुप नहिं रेखा। चेतन सत चित घन आनन्दा, निरविकार तेज अमित अभेदा॥१॥ अनुभ अजन्मा सरबग्य अनन्ता, अभेद अदैश अबिगत सुछंदा। नाम की बाती घीव अखंडा, इक ही जोत जलै ब्रहमंडा॥२॥ अनत बार तोहि धियान लगावा, मुनि जनि पै पार नहिं पावा। मन बच क्रम रविदास धियावा, घंटा झालर मनहि बजावा॥३॥

॥ पदे ॥

1.

सोहंग ओंकार निरविकार आनादि, आखंड धयान सारूप॥ अजर अमर आदि करना, पुरष अटल अनूप॥ कृपा करते दयाल जी, काटे बंधन करूप॥ साहिब बखशीश सत सुण, दास कर निज रूप॥ सच नाम को सिमर कर, जीव भये तत रूप॥ रविदास कहे भज नाम को, पावे शुद्ध सवरूप॥

2.

गुर की मूरति मन विखे, धरो सो हर दम धयान॥ नाम दान इश्नान कर, दवारे पावे मान॥ मंतर जप गुर हिरदे में, मिले सो निश्चल ज्ञान॥ भूख, प्यास ना उतरे, नाम बिना भगवान॥ सतगुर सो नहीं पावई, जो दिल मांहे सुआन॥ मन सच्चा कित बिध भयो, कर है किया बियान॥ झूठा पालन पालते, कहो कैसे कल्याण॥ आज्ञा गुर की चित्त धर, कहे रविदास बिखान॥

3.

कर एकागर बरित को, सिमरे नित करतार॥ साहिब की बात रीति का, कौण कथे विसतार॥ तिस की कुदरत अति बड़ी, जानै कौण विचार॥ सदगुण नित हिरदे बसे, मिलसी ठौर आपार॥ गुर की लखो दिआलत, सतगुर कीयो पसार॥ कहे रविदास भगवान ने, दास दीये जग तार॥

4.

प्रथमें सत सवरूप था, वहि अबिनाशी आप॥ मदय विआपक हो रहा, तिस को तूं मन जाप॥ अन्त समय भी रहोगे, निरंकार परताप॥ मन बाणी कर के भजे, मुंचित किल विष पाप॥ दाता करता आप है, धरति आकाश वियाप॥ महिमा बहुत बेअंत है, सतगुर ते होऐ थाप॥ सोहं नाम की धुन लगी, दिल के अन्दर आप॥ कहे रविदास विचार के, जानो गुर प्रताप॥

5.

जाप जपो तुम नाम का, कर सतगुर की सेव॥ गावत हिरदे नाम के, बूझत निज गुरदेव॥ नाम सत्य संसार में, पदारथ झूठ स नेव॥ दुबधा अन्तर की तजे, नित सतसंग करेव॥ आचार धरो गुर रीत के, मंगल नितय वधेव॥ कहे रविदास विचार के, साहिब देवन देव॥

6.

अंतर कर गावे सदा, हृदय कर भरपूर॥ खोटे कर्म तिआगसी, पाप भय सब दूर॥ काग रूप तज हंस हो, विकार ना करहो भूर॥ देव देह तुझ को दई, प्रतखश जान जरूर॥ कथना कथे ना हरि मिले, पावे खोजन नूर॥ कहे रविदास विचार के, रहो भगवान हजूर॥

7.

देवन वाला देत है, तिस की कर मन आस॥ सर्व युगी प्रति पालीया, तेरी

मिटी ना खाहश॥ अंतरयामी जानता, लेखे सास गरास॥ आज्ञा गुर की चित्त धर, साधन को रख पास॥ बखशण हारा बखशसी, प्रभु का होऐ दास॥ भाषण कर गुर नाम को, अंतर रख प्यास॥ अमृत वेला नाम सत, चार युगों में भास॥ सत संतोष धारण धरो, कहत भये रविदास॥

8.

तन मन धन अर्पण करो, बाणी जप हरि मीत॥ सत संगति कर संत की, दुष्ट त्यागो रीत॥ सवास सवास सिमरन करो, जनम आमोलक जीत॥ सोहं नाम के भजन से, दूर होए भ्रम भीत॥ तूंही तूंही रटता रहे, और ना लावे चीत॥ मान पाए जिन सेविया, प्रभ सो पाए प्रीत॥ नाम निशान प्राप्ते, जो गावत हरि के गीत॥ रविदास कहे सतसंग में, अवय पद सतगुर दीत॥

9.

गुरमुख सेती प्रीत रख, कुकरम से मन बंद॥ सत गोविन्द गोपाल गुर, और

जावन जान सन्बंध॥ अन्धेर मचयो सरब जगत में, परकाश ना बिन गुर चंद॥ नितय पड़न गुरमुख सत, जानत भय सरब संद॥ गुर ही धारे रूप सब, खेले खेल आनन्द॥ जन रविदास पुकारते, जपो ओअं कर बंद॥

10.

सरब ही साहिब एक है, दूसर कौन कहाए॥ मुक्ति ना पावे भजन बिन, जो उत्तम आप सदाए॥ ठाकर नदर ना आवही, कबहूं ना लेखै लाए॥ जो चाहे कल्याण को, सतगुर लए मनाए॥ गुण वंतिआं संग गुण वसे, जो तूं ध्यान लगाए॥ रविदास कहे संसार में, बहुरि ना जन्में धाए॥

11.

नाम धियावे देव मुनि, करता पुरष आगंम॥ सीस दान कर हरि मिले, तूं ना जान सहंम॥ ठाकर सदा समीप है, तिस बिन निहफल और॥ गुर गोपाल धियय तूं, मन आपणा कर भौर॥ बन्धन कौन छुड़ावसी, कीए बिना मन

धर्म॥ काटे गोबिन्द जन्म, मरन दूर होए सभ भरम॥ साहिब दीन दियाल सदा, सोई मनो पुकार॥ कहे रविदास प्रीति हरि, मन में राख विचार॥

12.

तिस जेवड दाता नांहि को, गुर आपरंपर सोए॥ गुर बिन सुरत ना सतय है, भरम थक्के सब लोए॥ देव नाथ और सिद्ध सर्ब गुर माने ते होए॥ धरती वयोम विचारिया, तिस ते भिन्न ना कोए॥ पाताल पुरी जयकार धुन, कच्छ मच्छ भी जोए॥ दाना, दाता, शीलवन्त, उपकारी जग होए॥ इंद्र ब्रहमा महेश गण, पवन बसंतर तोए॥_ यह सब बपुरे कीट सम, लखे ना साहिब जोए॥ कहे रविदास पुकार कर, भरम भीत मन खोए॥

13.

अठ सठ तीर्थ पुन्न फल, होवत जो सच जाग॥ ध्यान धरो प्रभू भजन में, तो होवे बड भाग॥ मन का मणका फेर लए, विरती का कर ताग॥ शरवण कर

के ही भयो, ऐ जग सगरो बाग॥ साहिब के सतसंग में, रहो मन सद ही लाग॥ जन रविदास सोहं गुण भज, मन मत अपनी त्याग॥

14.

गुणों का होवे सागरा, ध्याय निरंजन नाम॥ नाम गुर का वोहिथा, तेरे आवै काम॥ करता चित्त ना आवही, भूल गया तूं नाम॥ प्रभू का सिमरन छोड के, खोटे करता काम॥ औगुण तेरे दूर हो, पर तूं गुर की शाम॥ आठ पहिर भगवान भज, निकट ना आवे जाम॥ सवास सवास मन भजन करो, सिमरो श्री गुर नाम॥ रविदास कहे गुर शरण में, पावे सुख विश्राम॥

15.

गुरदेव दोवारे तेरा मान हो, निधआसन करे निहाल॥ जहां बैठे तहां सोभ हो, कबहूं ना होए बिहाल॥ गुरमुख की रीति धरो, गुरमुख की चलो चाल॥ एक ध्याना एक में, कर तूं यह संभाल॥ कारण करते अंत ना, तिस की प्रीति

निहाल॥ पूरा सतगुर मिलत है, प्राप्त होवे घाल॥ वसतु नाम प्राप्ते, हृदय, कर लै थाल॥ शोभा पावे देह में, कहे रविदास विशाल॥

16.

कुदरत कौन विचार है, कोई ना जाने भेत॥ सर्व ही शक्तिमान गुर, भूले मन लए चेत॥ गुर बिन आदि वियादि में, तीनों ताप जरेत॥ गुरु गोबिन्द प्रताप से, होत जात सर्व सेत॥ नाम लीए अघ जाएंगे, पापा मूल हरेत॥ जन रविदास अधीन हो, करो स्वामी हेत॥

17.

तिस बिन दूसर अवर ना, निरंकार को देख॥ अमर अजर भरपूर गुर, घटि घटि मांहि सुलेख॥ निरंकार सद सदीव सोए, साहिब सर्व विशेष॥ शरधा से प्रीतम मिले, पावत सर्व ही भेख॥ ताप तपे मन मार के, होत जात है शीव॥ उदास रहे संसार में, बहु बिअंत ही जीव॥ आतम देर बसाया, हृदय

में कर वास॥ जग में आया सुफल है, कहत भयो रविदास॥

18.

नाम धनी का सत सदा, गुरदेव राख मन टेक॥ अन्तर धरीं ध्यान तूं, बृति को कर एक॥ अंत करण सुधार के, सोहंग मनि करो पाठ॥ सतगुर की दरगाह में, सुंदर होवे ठाठ॥ गुर की किया उपमा कथो, अदभुत लीला रीत॥ प्रेम बिछोरा ना जरे, मीन समान है प्रीति॥ ओअं ओअं ध्यान धर, सोहं भेद विचार॥ तत रूप होए जनमनां, कहे रविदास आचार॥

19.

दुरमति का त्यागन करो, लेहो गुरमत खोज॥ खोटन की संगत तजो, किऊं सिर पर उठाओ बोज॥ गुर शरण में मन लागे, छूटे माया बंध॥ आगे मुशकिल ना बणे, होए नाम सनबंध॥ झूठ बोल, झूठा बणे, झूठ तियागो गैल॥ जन रविदास विचारिया, गली, गली कर सैल॥

20.

भगवान आतम देव का, करो मन अपने जाप॥ नाम बडाई मनन कर सब तापन सिर ताप॥ गति रीति ना कहि सको, जो माने गुर वाक॥ कागज़ मिले ना प्रेम को, कलम लिखे नहीं साख॥ बैठ विचारो मन विखे, सतगुर ध्यान लगाए॥ संगत का फल पाव है, पाप नरंचक लाए॥ बाणी रटो गुर, गुर सदा, अंतर लए सुख भास॥ मार्ग पावत लाभ हो, कहत सतय रविदास॥

21.

जीभा कांती मन करो, सान चड़ावो तेज॥ सच खंड में जा मिले, सतगुर देवे भेज॥ धर्म साथ संबंध जो, कुल तारन की चाल॥ प्रात कमाई अपणी, पाए मुशक्कत घाल॥ मुक्ति दवारा पाव है, चिंतन नाम हमेश॥ गुर सेवक की रीति लख, सतगुर जान नरेश॥ जोन, जोन भरमत नहीं, मनन के संग साथ॥ जन रविदास पुकारते साहिब कीनी दात॥

22.

वेराग विवेक ततीखशा, सम दम आदि ले खोज॥ मोमोखश बन सतसंग में, लेह परमातम मौज॥ तत तवं साधन भने, मुनिवर मति सुधीर॥ कथने मातर ना मिले, सोधन करो सरीर॥ मन इंद्रिय मलकर भरे, ततव मसी कहे आप॥ अंतशकरण भी शुद्ध नहीं, लागत सर्व ही पाप॥ पापी कर्म कमावना, सो सतसंग में नास॥ कलि के दोष सब दूर हो, कथन करे रविदास॥

23.

आपणा बीज तूं आप ही, खावत है बहु बार॥ तेरा ही तुझे सौंपता, वह दाता करतार॥ जो गुर शरणी परत है, तिल भर भी बेअंत॥ शोभा पावे लोक में, कहित मुनी जन संत॥ नरकन के अधिकार को, शीघर मन दे त्याग॥ भजन करो भगवान का, मिले रविदास बेराग॥

24.

गुण आवे गुण उचारे, गुण में रहे समाए॥ गोविंद गुरू, गोपाल गुरू, करता पुरष बसाय॥ भगवान भजन में सुख सदा, हो है सुख ना काए॥ कर विश्वास मन आपणे, सतगुर चरनी धाऐ॥ सत सुन्दर अति, अगंम अपारा॥ खेल साहिब का, सभ से नियारा॥ निरमल आतम सवरूप, लखि सरीर होऐ पवीत॥ सच्च खंड में जा बसे, कहे रविदास तूं मीत॥

25.

नारायण रंग करे जग, धारे रूप अजैब॥ दीन दिआल कृपाल प्रभू, धन सिरजनहार सुसाहिब॥ सुण सुण के उपमा भने, कवी ग्रंथ कुरान॥ काजी, मुल्ला कहित है, अप अपणी सभ मान॥ भेष, पंथ, योगी, यती, लखे ना सो अनजाण॥ आप हो उतपत प्रपंच कर, आप करत भय हानि॥ घड़ी महूरत जाणते, वह अपरंपर देव॥ देव, दनुज, मानुष, सभी, लागे तिस की सेव॥

अमर पहिचाने गुरू का, सो दास जाने निज भेव॥ जन रविदास विचारिया, सुख पावत नित सेव॥

26.

नाम ध्यावे सिद्ध भये, जपन जपो बहु बार॥ सतगुर के संग लाग कर, लोहा होवे पार॥ गुरू गोपाल जहाज जुग्म, गुर मनसा पूरन हार॥ साहिब की उपमा भनो, मुख से लख लख वार॥ मित्तर तेरा और नहीं को, तूं देखी नदर पसार॥ नदरी नदर सुधार मन, कहे रविदास विचार॥

27.

वरनण कर के को कहे, जग पालक परशंस॥ अंतर करो मिलाप गुरू, सुभ गुण की बसे बंस॥ सतगुर के उपदेश कर, निर्मल होवे हंस॥ सतिगुरू दाता अति बड़ा, ब्रहम जानीए अंस॥ ऐसा नाम निरंजनी, अंतर लए बसाए॥ हाथ जोड़ उसतति करो, गुर राखे सत भाए॥ ब्रहंम वकता, ब्रहम सोत्री, ब्रहंम

निसठा गुरू असंस॥ सतगुर संग प्यार कर, कहे रविदास बडहंस॥

28.

दाता सब गुण बड़ा है, किरत ना मेटे कोए॥ समुंदर सागर से जी तरे, किरपा करता सोए॥ वेद कथे, शास्तर कथे, तिस बिन अवर ना कोए॥ ना हूआ, ना होएगा, जानत है जग लोए॥ नाम जपो तिस धनी का, मात गर्भ नहि पोहि॥ सतगुर की कर बंदगी, संशय सकल मिटोए॥ गिर, पृथ्वी, चंद, सूर, सभ, धारत है भगवंत॥ रविदास कहे अलपग यह, जानत है किआ जंत॥

29.

गुरमुख दवारा नाद सुण हृदय मांह ले बूझ॥ सुरत धरो मत उपजै, नेतरीं होवे सूझ॥ मिले ना सतगुर शब्द तोहि, अंतर भरी है दूज॥ अमर होवे सतसंग में, मन अपने से झूज॥ श्रेष्ठ पुरूष का संग कर, मान करो सभ चूर॥ मन हसती सकल जरो, पापन को जो मूर॥ साहिब सेती प्रेम कर, रसातल से जा बच॥

गुर, गुर मन में रटन कर, मुख से बोल तूं सच॥ संतन के दवारे परो, होवे परम आनन्द॥ कहे रविदास भगवान के, गावो मन में छंद॥

30.

पताल रसातल आनन्त है, खोजन हारे लोक॥ प्रभु माया को अंत ना, ढूंडत करते शोक॥ जीव वितल है, जीव में, जीव सुतल सो जीव॥ जीव तलातल, महातल, साहिब लख लै सीव॥ अतल सात पाताल यह, जीव ईश लखि लेव॥ इस बिधि अंत ना आवे है, खै पताला भेव॥ बुद्धि कितने बल धारे, लागत ना कोई ताण॥ गुरमुख मन बसाईए, मानक नाम निशाण॥ चींटी के सम बल नहीं, चाले तेरा जोर॥ नाम बिना भगवान के, लाख मचावे शोर॥ उतरे आवरण दिले का, मन आपण ले साध॥ कहे रविदास पुकार के, दूर करो सब वयाध॥

31.

नदियां लहिरीं बस रहा, सागर अति गंभीर॥ चौदह रतन उपाया, सत गुरू गुणी गहीर॥ ऊठत, बैठत नाम भज, सो पावत सत सीर॥ मन अपणे गुरू गुरू रटो, कभी ना होवे भीर॥ मुख पवित्तर होत है, गुण गावत दीन दिआल॥ सरब घटा भरपूर है, अंतरयामी पाल॥ तुझे भरोसा ना पड़े, इस कारण कंगाल॥ रविदास कहे संसार में, अब भी कर तूं भाल॥

32.

एक घड़ी सिमरन करो, नहीं लागे कलू कलेश॥ प्रभू के दरबार में, होवे उज्जल भेष॥ पतित उधारण पारब्रहम, गुरू अविनाशी आप॥ श्रेष्ट पुरष का संग करो, शुभ गुण मन में थाप॥ अथाह प्रभू हर धनी है, गुर का नाम अतोल॥ सवास आमोलक सुफल कर, जिस का ना कोई मोल॥ रविदास कहे आश्चर्य वह, हरि मिलने की रीति॥ सवासा बिरथा न तजो, मन कर करो प्रीति॥

33.

निहाल, निहाल, निहाल है, वह करतार निहाल॥ कल्याण तेरा कल्याण हो, चरणी परो विसाल॥ ऐसी मनो प्रीति कर, जैसी चकवी सूर॥ जन रविदास ब्रहम रंग राता, औगुण हो सभ दूर॥

34.

साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना परे आकार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना सिफत शुमार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना कहे उचार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना करे विचार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं कछु लेस॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं कछु भेस॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं करतार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना पारावार॥ साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना सतगुर धाम॥ कहे रविदास पुकार के, सिध भये सभ काम॥

35.

सतगुरु उंचा अत बड़ा, सत उंचा वड नांओ॥ नाम निरंजन गुर सदा, मन माना फल पाओ॥ कितने ही योधे भय, शूर हुए आपार॥ सोहं नाम का मेल हो, नौका बने आधार॥ काम, क्रोध, ठग्ग ठगत है, राखो चित्त संभाल॥ सत परमातम वेधिया, सभी करे प्रतिपाल॥ कितने प्रभू के भगत भये, कितने हुए अवतार॥ कितने पंडित, ज्योतिषी, वेदां करे विचार॥ कितने ही ब्रहिमंड हैं, करता गुरू समरथ॥ कितने ही उसतति करे, दीन दयाल अकथ॥ कितने मूरख जगत में, रूप भय विकराल॥ कितने देवी, देवते, कितने काल, कराल॥ यह सभ खेल गोविंद के, अंत ना आवे कोए॥ कहे रविदास विचार के, प्रभु में रहो समोए॥

36.

सतगुर का धर ध्यान तूं, सतगुर संग निवास॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, गुर

का नाम प्यास॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, गुरू निरंजन लाल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, लिखत लेख सो भाल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, साधू मत विचार॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, अंत कर लै सार॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, लोभ विकार तियाग॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, कर्त्तव्य नीच विहाग॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, गर्भ ना आवे मूल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, विषय रस जा भूल॥ सतगुर का धर ध्यान तूं, केवल होवे मुक्ति॥ कहे रविदास विचारिया, ऐहो सार है युक्त॥

37.

सोहंग, सोहंग उचारीये, श्रेष्ठ पुरष संग प्यार॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, कबहू न आवे हार॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, गुर का नाम गहीर॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, खोजे मत सुधीर॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, भजन करो गुरदेव॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, ता जाने निज भेव॥ सोहंग, सोहंग उचारीये,

संध्या समय ध्यान॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, साकत संग न होय॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, निर्मल होवे सोय॥ सोहंग, सोहंग उचारीये, करन कारन अलेख॥ कहे रविदास पुकार के, मन नीवां कर देख॥

38.

सतगुर साहिब अति बड़ा, पावत ना कोई पार॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, जानत विरला सार॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, अंधयारे में दीप॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, सुंदर मोती सीप॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, अवर ना जाने भेत॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, भूले मन तूं चेत॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, नाम जपो मन मांहे॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, दास उधारे तांहे॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, रोम रोम में वास॥ सतगुर साहिब अति बड़ा, निसचे कहे रविदास॥

39.

निरंजन निरंकार प्रताप, मन कर जपे गुरू, गुरू आप॥ निरंजन निरंकार सभ दात, गुणी विचारो मन सभ भात॥ निरंजन निरंकार भगवान, आठ पहिर धर तांका ध्यान॥ निरंजन निरंकार अविनासी, जनम, मरण की काटे फांसी॥ निरंजन निरंकार करतार, सर्व दुःखों का उतरे भार॥ निरंजन निरंकार भवज्योती, दुरमत दुबिधा अंतर ना होती॥ निरंजन निरंकार नारायण भज, सर्व सुखों का होए आयण॥ निरंजन निरंकार गोपाल, जीव जंत की करे प्रतिपाल॥ निरंजन निरंकार नर नाथ, सर्व पदार्थ तिस के हाथ॥ निरंजन निरंकार प्रकाश, भज हृदय कहो रविदास॥

40.

ओअं, ओअं, ओअंनीत, मन धर सच भगवान प्रीत॥ ओअं, ओअं, ओअं ध्यान, सच सच सभ सच ही मान॥ ओअं, ओअं, ओअं पूजा, देवी देवा तिस बिन दूजा॥ ओअं, ओअं, ओअं सतसंग, नाम ध्याये मन कर रंग॥

ओअं, ओअं, ओअं जप लीजे, मुगध पत्थर भव नरि तरीजे॥ ओअं, ओअं, अमर कल्याण, अंतर हृदय चड़े हर भान॥ ओअं, ओअं, गुण विखयान, पवित्तर गुणों की होवे कान॥ ओअं, ओअं, तेरा अधिकार, पाप रोग सभ उतरे भार॥ ओअं, ओअं, ओअं दिन रैन, सोहं भज मन होवे चैन॥ कहे रविदास लखख गुर की करनी, सवास, सवास पर हर की चरणी॥

पैंतीस अक्षरी

उ उसत्त करो इक ओंकारा। तीन लोक जिन किया पसारा।

अ अलख को लखे जो भाई। देहें ढंढोरा संत सिपाही।

इ ईश्वर काया घट में। आकाश रमइयो जैसे सब मट में।

स शीश महल में स्वामि दर्शे। जहां प्रेम अमी रस बरसे।

ह हरि का सिमरण कीजै। कहे रविदास अमी रस पीजै।

क काया कोटि में रम रहयो प्यारा। सीस महल में दे दीदारा।

ख ख्याल से करो विचारा। सर्वव्यापी सब से न्यारा।

ग गोबिन्द ऐसे ज्ञानी। न कुछ भूले न कुछ जानी।

घ घन नहीं अहरण सहे चोटां। सतगुरु शब्द घड़या है अनोठा।

ङ ङ्यानत सोई सार। रहे रविदास बात विचार।

च चाम का चोला भाई। नाम बिना कुछ काम न आई।

छ छिन में भया ममोला। अमी सरोवर दिया झकोला।

ज जीव है, जनेऊ जाति का। दया की धोती तिलक सत्य का।

झ झिलमिल जोत जगाई। अलख पुरुष तहां पहुंचे आई।

ञ ञयानत सोई ध्यानी। दास रविदास कहे ब्रह्म ज्ञानी।

ट टैका टेर का एक राखो। एक बिना दूजा मत आखो।

ठ ठाकुर शीला तर गए भाई। पंडित बैठे मन मुरझाई।

ड डर नहीं हरि संग प्रीत। भगत जन बैठे मन को जीत।

ढ ढा दीनी बुर्जीपापन। सिमरण कीना अजपा जपन।

ण णम की लाई डोरी। कहे रविदास लगी लिव मोरी।

त त्रिगुण माया रचदी भाई। ऋषि मुनि लीने भरमाई।

थ स्थिर नहीं यह संसारा। राव रंक सब काल नगारा।

द दो इक दिन यहां मन्दिर सारा, फिर ठाठ छोड़ लद जाये बंजारा।

ध धनी जिन ध्यान लगाइ। काल फांस के बीच न आइ।

न नाम की नाव बनाई। कहे रविदास चढ़ो रे भाई।

प पार ब्रह्म परमेश्वर स्वामी। सब घट-घट के अन्तरयामि।
फ फिकर कर छोड़ जगसंसा। जा मिल बैठे अविनाशी पासा।
ब ब्रह्म सो ब्रह्म का वेता। गगन मंडल में राखो चेता।
भ भ्रम मिटे जो पंचम सीजे, जाये त्रिवैणी मजन कीजे।
म मन को गगन समाओ। केह रविदास परम पद पाओ।
य याद करो, वाह के गुण गाओ। पार ब्रह्म के दर्शन पाओ।
र राम रमे सो राम प्यारा। फिर न देखया जम का द्वारा।
ल लिव लगा ले भाई। जम का त्रास निकट न आई।
व विधीवध सिमरन कीजै। सोंहग नाम अमी रस पीजै।
ड़ ड़ाड़ मिटि जब हुआ नबेड़ा, कहे रविदास किया अमर घर डेरा
सोहंग शब्द मन किया बसेरा। मेट दिया चौरासी का फेरा।

ओंकार बावन का पैंतीस में जपयो है सार।

सर्व देव संतन को करें हैं नमस्कार।
पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरें हैं निज दास।
जिन सिमरियो सो मुक्त हैं कहे सद रविदास।
ओंकार पैंतीस मात्रा प्रेम से निसवासर कर जाप।
रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये तीनों ताप।
ओंकार पैंती मात्रा प्रेम से सिमरण कीयो मन वैराग।
रविदास कहे जो सिमरते, तिन के पूरण भाग।
पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरते रवि प्रकाश।
रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये जम के त्रास।
रविदास सिमरत रमते राम में, सत शब्द प्रतीत।
अमर लोक जाये वसियो, काल कष्ट को जीत।
ओंकार सप्त सलोकी मात्रा, सत कीयो जगदीश।
अमर लोक वासा कीया, काल नमावें शीश।

।।बाणी हफ़तावार।।

सोहंग सतिनाम धियाओ।। ऐतवार अमृत दा भरिआ बोले अमृत बैन।। गुरु का शब्द जपो दिन राती ता आवे सुख चैन।। ऐतवार वी सफल है हरि का सिमरन सार।। रविदास जो नाम उचारिए पाया मुख दुआर।।१ ।। टेक।। सोमवार सभ ठोर में जले थले भगवान।। महिमा प्रभु गाईए तब होवे कलियाण।। गोबिन्द गोबिन्द जाप से आवै सदा अनंद।। सोमवार सुख दा जपो जपो रविदास मुकंद।।२ ।। टेक।। मंगलवार आवै सदा होवे मंगलचार।। रल मिल सखीआं सिमरलो हरि हरि नाम अधार।। प्रीतम चरनी लागिया कभी न आवै हार।। मंगलवार सुलखणा कहि रविदास विचार।।३ ।। टेक।। बुधवार बोध सदा होवै ज्ञान प्रकाश।। गुरु प्रेम पूरे जो मिलै टूटे जम की फास।। अंत सहाई प्रभू भये करम कमाए सोई।। बुधवार बुध सफल है रविदास जो भगत होय।।४ ।। टेक।। वीरवार विदिया बड़ै पुन्न पुना अभियास।।

सतिगुर पूरे मिलन से होवे आतम प्रकाश ॥ गुरु ज्ञान का मूल है धरम मूल का हितकार ॥ वीरवार बिचारीए नसै पाप हजार ॥५ ॥ टेक ॥ शुकरवार सुहावना छिन छिन भजे करतार ॥ विछै बाशना झूठीयां देवै नरकां डार ॥ गति करमां अनुसरा है जैसा जैसा होवै ॥ शुकरवार सुहावणा रविदासी नाम जपेवै ॥६ ॥ टेक ॥ शनीवार भजन श्रृष्ट सत सत सभ वार ॥ शुभ करमां से सफल है आवण जाण संसार ॥ बिन भजन बिरथा सभ जानते जो जो आवतवार ॥ बारम वार हरि सिमरीए कहि रविदास बिचार ॥७ ॥ टेक ॥

बाणी पन्दरां तिथी

सोहंग सतिनाम धियाओ ॥ अमावस जो है भाखिया जानो मीत ॥ श्रृष्ट मुनी सभ गावदे गीत ॥ अमावस है छूत सदा बसै है जग जीत ॥ बिरलै बिरलै पीवगे सोहंग रस सुरजीत ॥१ ॥ भगता सेती गोष्टी जाए सभी बिहाय ॥

आउना उसका सफल है जो जाते लाभ उठाय॥ अमावस है जो आंउदिआ आवन जावन रीत॥ कहि रविदास विचारके राखो हरि से प्रीति॥२॥१॥ टेक॥ एकम एक परमात्मा संसारै है प्रकाश॥ सवास सवास तू सिमरलै तोड़े जम की फास॥१॥ दीन बंधू दिआल जो सोय है सिमरन सार॥ जगत सदा जो सुख देवे अंतर होय आधार॥२॥ हसती चीटी आदि लै जीवन हुकम अनुसार॥ भजन करो जन पालका होना जेकर पार॥३॥ एकम एक परमात्मा रखखणी उसकी आस॥ सति सति प्रभू सिमरते सच कहै रविदास॥४॥२॥टेक॥ दूजी दुरमति दूर कर रखणा गुरु से नेऊ॥ सफल करम तब होणगे गती पावै इह देहू॥१॥ दूजी दुरमति दूर कर दया धरम किरपाल॥ सति से कर गोष्ठी हिरदिया बसै गोपाल॥२॥ सुभ करमा फल सुभ है करमां संदणा खेत॥ पाप करम दे कीतिक सदा हार नहीं जीत॥३॥ दूजी दुरमति त्याग कर लीला अजब पहिचान॥ कहि रविदास बिचारके

भगत भजन कलियाण ॥४ ॥३ ॥ टेक ॥ संसारी तृष्णा त्याग के तन मन धन गुरुदेव ॥ मिथिया सभ को जानके रख नाम सनेह ॥१ ॥ करमी भगती करन से होवै जगत अधार ॥ वहि सोभा अति घनी अगे मिलै भंडार ॥२ ॥ तीरथ फल ना बरत फल नहीं जग कोई पाया ॥ मन महि हऊमै अहंकार जोय बिरथा सभही जाय ॥३ ॥ तृत्तीय त्यागीये मान को खोटे करम हंकार ॥ हरि हरि नाम उचारीए कहि रविदास पुकार ॥४ ॥४ ॥ टेक ॥ चौथ चारो तरफ महि दसों दिसा चोगिरद ॥ जलै थलै प्रभू आप है राखो नाम की विरद ॥१ ॥ चमन जो तुझै दिख रहा रहिना नहीं हमेश ॥ छण मंगूर शरीर है बदन रहित ना केस ॥२ ॥ सहायता कोई ना कर सके जिन सो लाया हेत ॥ अंत समें छड जाइगे मुख सेवन प्रेत ॥३ ॥ चौथ चोरी ना करो त्यागो विषै बिकार ॥ गोबिन्द सिमरनि सार है कहि रविदास विचार ॥४ ॥५ ॥ टेक ॥ पंचमी प्रीतम जान लउ सभना है भगवंत ॥ ब्राह्मण आदिक सिमरते कोई ना पाया अंत ॥१ ॥ पंच

ततव की रचना है जो दिखै आकार॥ तिसमे होवै लीन सभ लीला प्रभ अपार॥२॥ विषै वाशना झूठ है राह भला बीच नीत॥ बिना भजन संगी नहीं सरब सुखा का मीत॥३॥ पंचमे पती परमातमा सरब सृष्टि जान॥ गुर की सरनी धियावते होवै रविदास ज्ञान॥४॥६॥ टेक॥ शिष्टमी बित विखीयानीए षट रस भोजन आदि॥ जिसने सभ पैदा कीए कर तूं उसकी याद॥१॥ जो देखत सभ बिनसता बापर शाही आदि॥ सिमरन कर तूं प्रभू का जो है आदि जुगादि॥२॥ उलटे निजमां कीतिया आवत तुझको हार॥ सुभ करम के करन से पावै सति दरबार॥३॥ शिष्टमी शुद करम करावै जोवै॥ गुरू मिल जीवन मुकत है सखा रविदासी होवै॥८॥१॥ टेक॥ सतमी सारे रम रहा आप हरी सिरजनहार॥ तूं ना भूले पराणीयां सिमरन बारमबार॥१॥ हरि पूरन परमातमा निरधन अधार॥ सरब वियापी प्रभू है तूं ना कभी बिसार॥२॥ दुखीयां के दुख दूर कर कष्ट निवारो आप॥ सदा सहाई प्रभू है करै जो

उसका जाप ॥३ ॥ निंद का हंकारी पाठ का भगत है तास ॥ हरि भजन संग मुकती पावै जन रविदास ॥४ ॥८ ॥ टेक ॥ अठमी आठो आम जो सिमरन कर हरिनाम ॥ सुध तेरा प्रलोक जो होवै अंत कलियाण ॥१ ॥ होवै ज्ञान की रोशनी गुरु ज्ञान का मूल ॥ गुरु सेवा बहि संत की करम कमाय असलू ॥ भूलन अंदर सभ को अभुल्ल प्रभू है आप ॥ भुल्ला रहे जो पाप से मिटत सकल संताप ॥३ ॥ अठमी अटक ना होवसी जिस का रिदा सुफाय ॥ रविदास अटक है उसको पाप पोटरी उठाय ॥४ ॥८ ॥ टेक ॥ नौमी नौध भगत जो है भगता मनज़ूर ॥ पुरश भला जो करेगे सभना पूरन पूर ॥१ ॥ पद सेवन कीरतन जस चोथै अरपण जान ॥ दास सखा ने अरपना आठो बंदना मान ॥२ ॥ नौमी डंडाउत कही जो कहे कराए जाय ॥ रविदास भजन अमोल है बिरला पाए कोय ॥३ ॥१० ॥ टेक ॥ दसमी दरद निवार लै सचे सतिगुर संग ॥ समां विअरथ जाइगा हंकारी दुष्ट भुजंग ॥१ ॥ मैं मेरी नूं मार लै मन महि शांत होवै ॥ क्रोध

बुरा है काल से इसको लेउ समावै ॥२ ॥ श्रृष्ट मुनी सभ समझते करदे नाम अधार ॥ सरब ठोर में बस रहा सच्चा सिरजणहार ॥३ ॥ दसमी दिशो दिश बस रहा सारे है करतार ॥ हरि हरि तुल ना प्रानीआं कहि रविदास बिचार ॥४ ॥११ ॥ टेक ॥ एकादसी एक दा दास रहू फूरने तजो अनेक ॥ भगत होत तर जावगे सदा मानीए टेक ॥१ ॥ अंबा गुवाही निंदा बास ऐह जान ॥ ऐह सब जोहर सुमन है छाडो इनका ध्यान ॥२ ॥ जूआ मास मधर बेषिया हिंसा चोरी कार ॥ जिह खोटे करम है डोबन नरक मझार ॥३ ॥ मनुख जून सुलक्खणी गत करमां अनुसार ॥ बिना भजन बिरथा जनम जाय कहि रविदास बिचार ॥४ ॥१२ ॥ टेक ॥ दुरादसी दे दरबार डिठा अजब अंध ॥ बड़े क्रोध से पाप है बास खिमा मुकंद ॥१ ॥ सति संगति महि धरम है बड़े नाम का रंग ॥ बैकुंठ भी उसे आखदे जहा होते संत संग ॥२ ॥ धन के भागी चार है धरम चोर नरप आग ॥ धरम हेत जो लाएगा तिन कहे बडभाग ॥३ ॥ धरम

हेत ना लामदे लैदे तीनो नाय॥ चोर नरप ओर आग जो कहि रविदास बताय॥४॥१३॥ टेक॥ तरैदसी तारन हार है सदा सदा तूं ध्याय॥ लख्ख चुरासी जून से उतम दीया बनाय॥१॥ बंदे बुरज बना दीयां ऐसा अजब बनाय॥ ऐसा बने ना ओर से मन तन सीस लगाय॥२॥ उस को ना तूं भूलणा पिआ पट के भाय॥ तूझै अहार पहुँचावता उदर मात के जाय॥३॥ तेरस तेरा कलपना झूठा दिखता भास॥ झूठा सच्चे पेट का सच कहे रविदास॥४॥१४॥ टेक॥ चांद चौदा भए जब दिखता सरब अकार॥ सरब बियापी प्रभू है सूरज चंद अते तार॥१॥ हरि से प्रीत करो मन मेरे जैसे चंद चकोर॥ बालक प्रीति खीर से बादल घटा से मोर॥२॥ छिछ बिन सूनी रैन जो हिरदै ज्ञान बिन मान॥ गुरु ज्ञान अमुल है उतम भगत हरि जान॥३॥ चौदा चौदा रतन सम इच्छा पूरन होवै॥ रविदास संसै सभ मिटै प्रभू प्रेम बस होवै॥४॥१४॥ टेक॥ पुन्या पूरन चंदरमा सारे हा परकास॥ लोचन ज्ञानी तरैगे हिरदै नाम

परकाश ॥१॥ गुरु सुख अमृत पीवगे मनमुख अंध गवार॥ प्रेम लाई लड़ फड़ैगे मिलत पदारथ चार॥२॥ रविदास जिह ग्रंथ है पड़ै सुणै मन लाय॥ सभ ही पदारथ मिलेगे इससे सभ बर पाय॥३॥ पंदरां तिथी संपूरन है पूरन पाठ कराय॥ सरब इछिआ संपूरन है सभना रविदास सहाय॥४॥१६॥ टेक॥

'बारह मास'

''चेत''

चढ़या चेत सुलक्खना, कर संतन संग प्रीत॥ गुर चरनन चित्त लाए कर, राम नाम जप्प नीत॥ गुर गोबिंद जहि गाईए, कर सरवण नित्त नीत॥ गुर के चरनन प्रेम कर, हिरदे धरो गुर मीत॥ बचन गुर के सुनत ही, मिटत भरम सभ भीत॥ मन मुखख संग ना कीजीए, गुरमुखख संगत याहर॥ मनमुखख संगत बिघन है, गुरमुखख संगत सार॥ मनमुखख संगत डूबणो, गुरमुखख संगत पार॥ गुरमुखख रिदै प्रगास है, मनमुखख अंध गुवार॥ गुर के अमृत वचन सुण, शरधा हिरदे धार॥ रविदास भगती एही है, हिरदे खूब विचार॥ चेत सुहाणां तिनां नूं, जिनां सोहंग नाम प्यार॥

''वैसाख''

वैसाख सुहावा सर्व सुख, गुर के वचन विचार॥ अंतर ध्यान लगाए कर,

समझो सार आसार॥ गुरदेव को ग्रहन कर, तज सब झूठ बिकार॥ हिरदे हरि, हरि हरी को, सिमरो वारं वार॥ दुष्टा संग त्याग कर, संतां संग प्यार॥ दृड़ कर राम ध्याऐ तूं, भव निधि उतरे पार॥ हरि, हरि नाम जपंदिया, कदी ना आवे हार॥ भगत बिना गुरदेव की, होवत नहीं कल्याण॥ गुरु बिना जन्म विअर्थ ऐह, जावत साची मान॥ गुर हरि भगत कहंदिया, निहचल मिल है ज्ञान॥ कहे रविदास लग चरन गुर, मन का हर अभिमान॥ वैसाख सुहावा तिनां है, हरि, हरि जपे सुजान॥

''जेठ''

जेठ तपत बहु घाम कर, शांत ना होवत मीत॥ क्रोध अगनि कर तपत, मन लोभी लोभ परीत॥ सोहंग नाम मुख्ख जपत, जन कीरत करैह नीत॥ संतां संग निवास कर, शांत भयो तिन चीत॥ उतपत करे आप सभि, करे पालणा नीत॥ प्रभू बिन दूजा नांहि को, कर निहचे परतीत॥ तिस प्रभू को तूं जप

सदा, होकर मनो नाचीत॥ प्रभू सिमरन गुर दया ते, नष्ट होत जम भीत॥ सतगुर के प्रताप ते, गावहु प्रभू गुण वाद॥ सो किरण नेतर रसना नाम का, करण दीए सुण नाद॥ सुंदर साजिया जाहि प्रभ, राख सदा तिस याद॥ जो जन भगत बिहीन है, जनम जाए तिस बाद॥ गुर चरनी लग भगत कर, मिटह पाप अगाद॥ कीरतन भगती तीसरी, रक्खो इन को याद॥ जन रविदास गुरू सिमरिया, जो जन सदा आनाद॥ जेठ तापंदा ना लग्गे, जिन चाखिया नाम सुआद॥

''हाड़''

हाड़ अवध है घाम की, शांत अवध सुख जान॥ लोभ अवध है पाप की, कर भगत मिले हरि धाम॥ गुर के चरन सु कंवल की, करहि सेव सुजान॥ सगल सृष्टि जैसे मलत है, चरण कंवल भगवान॥ आठ पहिर गुर चरन मल, दृढ़ कर निहचे ध्यान॥ अन्तश करण कर शुद्ध, तब होत पाप की हान॥ पाप नष्ट

गुर भगत ते, दर्शन करहो नीत॥ कारण भगत है मुकत का, कर निहचे प्रतीत॥ चरन भगत कर लछमी, शक्ति भई सु मीत॥ जगत चरन की शक्त तिस, भई सु जानो मीत॥ भगति सु गुर के चरन की, कर निहचे धर चीत॥ गुर बिन और ना ध्यान धर, ऐह रविदास की रीत॥ हाड़ शान्त सुख तिन जनां, जिन गुर भगत प्रीत॥

''सावन''

सावण शान्त भई जगत में, बारश होए बशेस॥ घर घर मंगलाचार है, नासे सभी कलेश॥ अन्न धन बहुता उपजिआ, गऊआं घास हमेश॥ सुहागणि सदा आनन्द है, दुहागणि मैला भेस॥ कर पूजन गुर चरन की, शरधा साथ हमेश॥ पान, सुपारी, पुष्पकर पूजन करो हमेश॥ अर्चना भगती पंचमी, गुर पूजा में ध्यान॥ बिना इष्ट गुरदेव ते, पूजो देव ना आन॥ गुरू हरि में ना भेद कुझ, कहयो आप सुजान॥ निहचे कर गुर चरन भज, होवत है कल्यान॥

गुर समान नहीं और जग्ग, जानत संत सुजान॥ कहि रविदास गुर चरन को, करत सदा ही ध्यान॥

''भादरों'' (भादों)

भादरों भरम भुलाइया, माया संग प्यार॥ गुर बिन शांत ना पाए है, जनम मरन में बारंबार॥ जिन्हां विसारिया राम नाम, गुर चरनी नहीं प्यार॥ धृग तिनां का जीवणा, कांहू आए संसार॥ भवि जल मांहि भवंदियां, ना उरवार न पार॥ गुर चरनन का आसरा, जिन मन लीना धार॥ कर डंडोत गुर चरन में, भवनिध उतरे पार॥ गुरुदेव गुरु समझ के, करीं शुकर विचार॥ बन्दना भगती छठी ऐह, करे शिश वडभाग॥ अवर करम सभ त्याग कर, गुर की चरनी लाग॥ गुर के चरन बहु प्रेम कर, माया मोह त्याग॥ बिन गुर भगत न थिर कछू, जगत पसारा बाग॥ पूरन पुन्न प्रताप ते, जागियो इसो बराग॥ सोएयो मोह की नींद में, गुर किरपा भयो सुजाग॥ रविदास गुरु चरन को,

तूं कभी नहीं त्याग॥

''अस्सू''

अस्सू आसां पूरीयां, जब गुर भये दियाल॥ चरनी लावो दास को, करो प्रभू प्रतिपाल॥ प्रेम तार गुरनाम मन, गल पावो माल॥ दर्शन कर गुर चरन को, तब ही भये निहाल॥ गुर चरनी लग भगत कर, त्याग मोह का जाल॥ गुर भगती तब पाईए, जो होवे लिखिया भाग॥ दासा भगती ऐही है, सपतम जानो लाल॥ करो अभी पछताओगे, फिर हाथ ना आवै काल॥ ऐह दासा भगती कीनी विरले वीर॥ सवास, सवास आज्ञा राखियो धीर॥ रहे सदा विच आज्ञा, एहो भगत महान॥ दासा भगती ऐही है, दासन दास बिखान॥ बुध्ध सुध्ध तब्ब होए है, पावै निरमल ज्ञान॥ अस्सू पूरन आस सब, गुरूदेव विखियान॥ रविदास गुरू चरनन का, सदा करत है ध्यान॥

''कतक''

कतक कर्म त्याग कर, भगत करो गुरदेव॥ सोहंग सोहंग जपंदिया, कर संतन की सेव॥ मात, तात और भ्रात ते, प्रिय जान गुरदेव॥ और सखा नहि जगत में, जैसे है गुरदेव॥ सखा भगत ऐह अशटमी, कीती अर्जन देव॥ सखा जान गुर भगत कर, त्याग करो अहंमेव॥ काम क्रोध हंकार तज्ज, तब्ब कछू पावै भेव॥ सखा भगत सुभाव यह, जिम जल्ल, दूध्ध मलेव॥ सरब करम को त्याग कर, हरि गुर जप दिन रैन॥ बाझह नीर जिम मीन को, आवत नांही चैन॥ चकवी करे विलाम जिम, कब ऐह जावे रैन॥ चंद चकोर को प्रीत जिम, मोर मुगध घन बैन॥ सवास, सवास नहीं बिसरे, जिऊं बच्छरे को थैन॥ जिम कामणि प्रसंन्न अति, पती को देखत नैन॥ कतक सवेर काम सभ, जब गुर करना ऐन॥ रविदास गुरूदेव चरन को, धोए धोए कर पैन॥

''मघ्घर''

चड़िया मघ्घर हे सखी, गावो प्रभ के गीत॥ संता संगत पाए कर, गुरूदेव सिमरो नीत॥ तन, मन, धन सभ अरप कर, ऐसी करो प्रीत॥ त्याग लोभ मोह अहंकार सभ, गुरूदेव की करो प्रीत॥ गौण वाक सभ त्याग कर, संत वचन धर चीत॥ तन मन धन ऐह हंकार, आपणे कछहु ना मान॥ गर्भ करत जो इनसे, सो नर है अनजाण॥ आप कछहू ना होत है, देणहार हरि धाम॥ मैं कीया मैं करत हूँ, कूड़ा करहि माण॥ हरि का दीया सो गुर दीया, तैं की दीया आन॥ तेरा इक हंकार है, अर्पण तिस को मान॥ नव प्रकार दी भगत ऐह, सत गुरदेव बिखान॥ जन रविदास करे भगत जो, शुद्ध भयो तिस मान॥

''पोह''

मघ्घर पूरा भया जब, तब चड़िया पोह मास॥ सोहंग नाम तूं सिमर नित्त, जग्ग ते होए उदास॥ अवर कामना सर्ब तज्ज, सतगुर की कर आस॥ सतगुर

शरणी लग्गियां, पाप होत सब नास॥ सरवण करत गुरां ते, साधन ज्ञान बिलास॥ वचन धार गुरदेव उर, सभ संसे होवन नास॥ सतनाम उपदेश गुर, कर तूं दृढ़ अभ्यास॥ वचन गुरू परकाश कर, होत भरम सभ नास॥ सरवण इस का नाम है, सुण सतनाम विचार॥ सत सरूप परमात्मा, मिथिया जगत आसार॥ तिस प्रभ को तूं सिमर मन, जो है सरब आधार॥ सतगुर शरनी लग कर, समझो सार आसार॥ प्रभ बिन अवर ना जाण कछहू, सब इक ब्रहंम पसार॥ असथावर जंगम आदि सभ, जीया जंत निरधार॥ जन रविदास को बीतिआ अब सुन माघ विचार॥ जन गुरुदेव हरि भेटिया, भवजल उतरे पार॥

''माघ''

माघ महीना धर्म का, दृढ़ कर तूं सतसंग॥ संतां संग प्रीत कर, कदी ना होवे भंग॥ धूड़ संत के चरन की, सोई श्रेष्ट है गंग॥ पापां की मल्ल उतरे, चढ़े

नाम का रंग॥ मनमुख्ख संग ना कीजीए, पडत भजन में भंग॥ दु:ख बिनसे सुख लाभ होवे, गुरमुख्ख जिन के संग॥ नाम जपो मिल गुरमुख्खां, जो है सदा आसंग॥ तूं वी प्रभ ते भिन्न नहीं, जिऊं जल मांहि तारंग॥ सोहंग नाम रग रग रचे, नाम का चड़े जब रंग॥ पंचो वैरी त्याग कर, तब होए निसंग॥ गुरु प्रेमी गुर की शरण गहि, करत खूब विचार॥ गुरुदेव के प्रताप बिन, समझे न सार असार॥ करके दृढ़ उपदेश गुर, भवनिधि उतरे पार॥ मन्द भाग बिन सतगुरां, डुब्बण भव निध धार॥ सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आत्म राम॥ जानण जोग सु जानिया, जो आत्म निज धाम॥ मिटिया गुमान गुर दया ते, पाया अब विसराम॥ पुन्ने सगल मनोरथां, रहियो ना बाकी काम॥ अनेक जन्म दु:ख पाए कर, आए गुर की साम॥ जिहड़े विछड़े तिह मिले, भये अभ आत्म राम॥ सतगुर के भजन बिन, नही अवर कुछ काम॥ इको सोहंग सतनाम जीयो, सिमरो आठो जाम॥ सरवण कर गुर वचन को,

निसचे कर उपदेश॥ निसवासर अभ्यास कर, तज्ज कर सगल कलेश॥ बुद्दबुदा फेन तरंग का, जल्ल ते भिन्न ना लेस॥ सब भूखण जिन कनक के, कंचन बिन ना शेष॥ घटि मिट माटी रूप सब, और ना कछहु विशेष॥ अनिक भांति पट जो भये, सूतर तिस का वेस॥ रविदास गुरू चरन के, करहूं सदा आदेश॥

''फगन''

चड़िया फागण मास जब, फूली सभ गुलजार॥ धरती सब हरियावली, सुंदर बाग बहार॥ बुल्लबुल्ल मसत बहार पर, भंवरा भई गुलजार॥ निवण फल्ल बहु बाग में, गलगल, आम, आनार॥ गुरमुखख गुर की शरण गहि, करते खूब विचार॥ सतगुर के परताप कर, समजे सार आसार॥ कर के दृढ़ उपदेश गुर, भव निध उतरे पार॥ मंद भाग बिन सतगुरां, डुब्बण भव निध्ध धार॥ सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आतम राम॥ जानण योग सो जानिया,

जो आत्म निज धाम॥ मिटिया गमन गुर दया ते, पाया अब बिसराम॥ आनेक जनम दुःख पाए कर, आए गुर की शाम॥ जिहड़े विच्छड़े तिह मिलो, भये सो आतम राम॥ जन रविदास गुर भजन बिन, नहीं अवर कछहु काम॥ गुरू चरनों का ध्यान कर, सुण बारां मासक उपदेश॥ पढ़े सुणे जो प्रेम कर, होवे कल्याण हमेश॥

''दोहरा''

धरत अकाश को थापिया, रैन दिवस नित्त पाल॥ सर्व जीव के करम जो, साहिब करे ख्याल॥ आप अपना सभ पावते, किरत धुर परवान॥ पवन पानी सवंतर के, रखशक भये भगवान॥ रविदास कहे भज नाम को, निरभै पावै वास॥ तेरा फल तुझ को मिले, होवे बंद खलास॥

''सांद बाणी''

सोहंग सांद सोलकखिआ, सरब घटि। मिल गुर नाम लगाइयो रट्ट॥ चौंक चतर जग्ग जाण महान। पूरन हार जगत सो प्राण॥ नानके, मापे, साक सोहेले। कर किरपा सतगुर प्रभ मेले॥ हस्थ गाना, गणियो सो माल। किया पुन्न दान रचन आकाल॥ कुंभ कमाल जनम, जन पाइयो। सुरत शब्द आनाज मिलाइयो॥ भर जल, कुंभ कारज में धरियो। तिव कारज सोपूरण करियो॥

दीपक दिल, हंग तेल बिठाई। सुरत मिला, उत्ते जोत जगाई॥ गुर भरवासे, सो संधूर। नौं दर तों, नौं ग्रहि सभ दूर॥ गुरमुखख सांद, समझ सच सोई। सभ कारज, प्रभ ओट लै होई॥ खोपा कारज, समगरी घिओ। इक दर खतम सोगंदी भयो॥ अब अंब, पत जगन जग्ग जाग। सुरत शब्द मिल मंगल राग॥ सब मिल प्रण, प्राण बिठाओ। संग गुर सति विशवास जमाओ॥ कहे रविदास भज हरि नाम। प्रभ सो ध्यान, सफल सब काम॥

''अनमोल वचन''

(मिलनी के समय)

मेल मिलाइया दाते, मिलिया मिलणे के योग॥ दिल जे मिलावे दाता, जांदे विछोड़े वाले रोग॥ खुशीयां सतगुर बख्शे, उमरां दे जांदे ने वियोग॥ तन, मन वारिया जावे, मिलणी आदर संग होग॥ किरपा पग्ग मसतक राखो, सतगुर सरब सिर योग॥ प्रभ तों मिल के मांगो, पवे ना विछोड़े वाला भोग॥ कहि रविदास पुकारै, जनमां दे जांदे सारे सोग॥

''शादी उपदेश''

॥एक ओंकार सोहंग सतनाम जीओ॥

॥दवैइया छंद॥

''पहिलड़ी लांव''

पहिलड़ी लांव हरि दर्शन गुरां दा, जावे दूर बुलाई॥ दीआ मेल हरि दया धार

के, गुज्झी रंमझ चलाई॥ अनहद शब्द सुणे मन थिर कर, मिट गए सरब अंधेसे॥ किरपा सिंध गुर मिलिया पूरा, लिव लागी हरि भेसे॥ पूरे गुर ते शब्द सच्च पाऐआ, रतन अमोलक मीता॥ सुणदिआं ही मन मसत दीवाना, शब्द गुरां ने कीता॥ महांवाक सुण, सुण के गुरू दे, शरधा प्रीत मन आवै॥ कहि रविदास ऐह है लांव पहिलड़ी, चौंसठ्ठ तीरथ नहावै॥

''दूजड़ी लांव''

दूजड़ी लांव प्रेम परीती, सुरत शब्द मिलाई॥ सतगुर कीती परम परीती, दरगह में सुख्ख पाई॥ सरब मनोरथ तिस दर ते पाउ, शरण परै को तारै॥ हुकम अन्दर है चार पदार्थ, तन, मन जेकर वारे॥ सतगुर शरण रहि वडभागी, सहिंसे सगल गुआऐ॥ सतगुर दाता प्रभ संग राता, निस दिन हरि लिव लाए॥ भरम भुलावा मिटिया दावा, चाल गुरां दी चाली॥ कहि रविदास ऐह लांव दूजड़ी, बचन गुरां दे पाली॥

''तीजड़ी लांव''

तीजड़ी लांव अवरन दोष ते, रहित भया मन मेरा॥ हरि घटि दे विच ऐक समाना, सो घर पाया डेरा॥ परम प्रभू परमेश्वर जाना, तां सुखख मिले उपारै॥ मन में सच्च मंगल सुखख होए, जो लोचा मन धारै॥ मंगल दे मंगल नित गावां, ऐहो अमृत धारा॥ हरि, हरि संग लिव जुड़ी जुड़ंदी, साचा ऐह सहारा॥ सुंदर शब्द आमोलक दर्शन, जो सतगुर दर आवै॥ कहि रविदास सो लांव तीसरी, सुरत गगन चड़ जावे॥

''चौथड़ी लांव''

चौथड़ी लांव रतन हरि जाना, सुख संपति घर आऐ॥ आसा, मनसा सतगुर पूरे, जै, जै शब्द अलायि॥ धीरे, धीरे गई पहुँच हुण, हो सतगुर दी दासी॥ ना आवे, ना जावे कित वल, मिलिआ पुरख अविनाशी॥ सति संतोख भया मन मेरे, सतगुर वचन सुनावै॥ आया बेराग, मिलिया अविनाशी, जोड़ी

जूड़ी सुहावै ॥ मन मंदर मांहै चों उपजिया, प्रीत प्रभू संग लाई ॥ कहि रविदास सति लांव चौथड़ी, पुरखे पुरख मिलाई ॥

''सुहाग उसतत''

॥ एक ओंकार सोहंग सतनाम जीओ ॥

सुरत सुहागण गुरू देव प्यारी, सोहंग नाम संग खेली ॥ बहुत जनम दे विच्छड़िआं नूं, आण गुरां ने मेली ॥ झूठी खेड बिसर गई तन ते, बाजीगर सिऊं मेली ॥ सच्चा पुरख मिलाया परमेश्वर, तिस संग लाड लडेली ॥ आप समान आपणे कीती, आज्ञान नींद ते जागी ॥ भुल्ली चुक्की रसते पै गई, आतम सिऊं लिव लागी ॥ सरब विआपी सतगुर मेरा, सब दा करे सुधार ॥ कहे रविदास मन भया दीवाना, मिलिया अमृत धार ॥

॥ मंगलाचार ॥

''मंगलाचार पहिला''

हरि, हरि नाम धियाओ, सदा मन प्रेम कर॥ लोभ, मोह, हंकार, दूत, जंम दूर हरि॥ सच, शील, संतोख, सदा दृढ़ कीजीए॥ अमृत हरि का नाम, प्रेम कर पीजीए॥ संतां संग निवास,सदा चित्त लोड़ीए॥ मनमुख दुष्टा संगत, तों मन मोड़ीए॥ मनमुख चित्त कठोर, पत्थर सम जानीए॥ भीजत नाहन कभी, रहे विच पानीए॥ तजि कठोर का संग, सदा गुर शरण गहु॥ गुर चरनन में ध्यान, सदा मुख्ख राम कहु॥ निज पती साथ प्रीत, सदा मन कीजीए॥ तन, मन अरपे तांह, सदा सुख लीजीए॥ निज पती साथ प्रीत, साई सोहागणी॥ पती बिन आन ना हेरे, सा बडिभागणी॥ जिन धन पती परमेश्वर, जानयो, है सही॥ सदा सुहागण नार, पाए दुःख ना कही॥ कहि रविदास पुकारे, जपयो नाम दोए॥ हरि कारज सो एक, सदा सुख माणो दोए॥

''मंगलाचार दूसरा''

दूजा भाओ मिटाओ, मंगल दूसरा ॥ बण, तृण परबत, पूर रहयो, प्रभ हूंसरा ॥ घटि, घटि ऐको, अलख, पसारा पसरिया ॥ गुरमुख जाने ज्ञान, ना जाने असरिया ॥ सभ घटि पूरण ब्रहम, जान गुर पाएके ॥ रहे सदा आनन्द, तास गुण गाए के ॥ जो हरि ते बे-मुख, सदा दुःख पायि है ॥ मानस जनम आमोल, बिअरथ गुआयि है ॥ गुर बिन लहे ना धीर, पीर बहु पायि है ॥ लहे अनादर सरब, ठऊर जहा जायि है ॥ जब गुर भये दियाल, सो चरनी लाया ॥ सतगुर काटे बंधन, नाम जपाया ॥ साध संग प्रताप, सदा सुख पाइए ॥ संतन के प्रताप, नाम हरि ध्याइये ॥ संतन के प्रताप, पती प्रभ पाइए ॥ मिलिया अटल सुहाग, वियोग गवाइए ॥ संगत तों आशीर्वाद, इस जोड़ीए ॥ कहि रविदास इन संग, सदा सुख लोड़ीए ॥

''मंगलाचार तीसरा''

रलि मिल सखीयां, मंगल गाया तीसरा॥ सदा जपो हरि नाम, ना कबहू बीसरा॥ सतगुर के लग चरन, सदा हरि गाइऐ॥ रिद्ध सिद्ध नौं निद्ध, सभी कछहू पाईए॥ सतगुर के प्रसाद, अटल सुहाग है॥ सतगुर भये दिआल, तां जागियो भाग है॥ सतगुर दर्शन पायि, मिटे अघ सरब ही॥ पाइयो शील निधान, मिटाए गरब ही॥ रहिया ना संसा मूल, जिन्ही गुर पाया॥ हिरदे भया प्रकाश, अज्ञान मिटाया॥ बिन हरि नाम ना सार, कछहू संसार है॥ हरि का नाम ध्यावै, भवि निद्धि पार है॥ मंगल महां सो मंगल, हरि हरि नाम है॥ आठ पहिर मुख जपो, ऐही शुभ काम है॥ सच रविदास बतावे, नाम ना छोडीए॥ गुर चरनन में ध्यान, सदा मन जोड़ीए॥

''मंगलाचार चौथा''

मंगल चार आनन्द, सुखी मुख गाया॥ कारज भया सुहेला, हरि हरि ध्याया॥

धन और पिर की, प्रीत बणी इक सार है॥ घटा, छटा सम मिली, मीन जिम वार है॥ पिर संग पाए आनन्द, ना दुःख की लेस है॥ पती की आज्ञा में, जो रहे हमेश है॥ पती परमेश्वर करके, जिन धन जाणिया॥ सदा सुखी बहु नार, सरब सुख माणिया॥ जिन पर सतगुर दयाल, सुखी बहु गाइए॥ महिमा अपर अपार, ना कीमत पाइए॥ सतगुर के संग, तरे अवर वी केतड़े॥ कर के दृढ़ प्रीत, प्रेम करो जेतड़े॥ कारज सब ही पूरे, सतगुर कर दीए॥ पूरब पुन्न अनेक फल तिस अब लीए॥ जन रविदास प्यास, सदा गुर नाम की॥ हरि संग रहे प्रीत, ओट इक नाम की॥

''अनमोल वचन''

(लड़की और लड़के के लिए)

प्रणवंते प्रण घड़ी, सोहाई जीओ॥ प्रभ कृपा ते आण, मिलाई जीओ॥ प्रण

प्रणवंते प्रण, धारन की जीओ॥ प्रण में एक नाम, सो ली जीओ॥ पती घर पतनी, एक रसायण जीओ॥ मात बड़ी, छोटी सम, भैण जीओ॥ पती परमेश्वर, सम नहीं देव जीओ॥ पूजन, सेवन सम, नहीं मेव जीओ॥ पवन अगन, जल, जन हमराई जीओ॥ सूरज, धरत, संगत, चंन अगवाई जीओ॥ बहुत जनम विछड़त, वियोग जीओ॥ सुरत शब्द वियोग, संजोग जीओ॥ प्रण करते, प्रण तोड़, निभाओ जीओ॥ लोक कुसंग फरक, नहीं पाओ जीओ॥ जन रविदास निभउ संग, सोई जीओ॥ गुर किरपा ते, प्राप्त होए जीओ॥

श्लोक

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास॥

रविदास हमारे राम जी दसरथ करि सुत नांहि॥ राम हंमि मंहि रमि रह्यो बिसब कुटंबह मांहि॥१॥ रविदास हमारो राम तो सकल रह्यो भरपूरि। रोम रोम मंहि रमि रह्यो राम मसूक न दूरि॥२॥ सर्व बिआपक राम हइ नांह कोउ इक ठांम। सतगुरु साहिब सखा भयो रविदास हमारो राम॥३॥ सर्व निवासी राम जू सब घट रह्यो समाइ। रविदास नाम चकमक बिना हक नूर अद्रिस्टाइ॥४॥ सब घट मेरा सांइयां जलवा रह्यो दिखाइ॥ रविदास नगर मंहि रम रह्यो कबहु न इत उत जाइ॥५॥ सब घट माहिं रमि रह्यो रविदास हमारो राम। सोइ बूझै राम कूं जो होइ राम गुलाम॥६॥ घट घट बिआपक

राम है रामहि बूझै कोय। रविदास बूझै सोइ राम कूं जउ राम सनेही होय ॥७॥ रविदास हौं खालिक देखिआ सकल रह्या भरपूर। सब दिसि देखहुं बिआपिआ खालिक का ही नूर ॥८॥ मुकुर मांह परछांइ ज्युं पुहुप मधे ज्यों बास। तैसउ ही श्रीहरि बसै हिरदै मधे रविदास ॥९॥ रविदास पीव इक सकल घट बाहर भीतर सोइ। सब दिस देखऊ पीव पीव दूसर नांहि कोइ ॥१०॥ एकै ब्रह्म है सकल मंहि अर सकल ब्रह्मह मांहि। रविदास ब्रह्म सब बेष मंहि ब्रह्म बिना कछु नांहि ॥११॥ गगन मंडल पिअ रूप सों कोट भान उजियार। रविदास मगन मनुआ भया पिआ निहार निहार ॥१२॥ रविदास पिअ बिनु जगत मंह सूनी सेज न कोइ। जिन देखूं तित पिअ कर प्रगट मोजरा होइ ॥१३॥ सभ नूरन कर नूर जउ सब तेजन मंह तेज। रविदास हमारे पीव करि सब सों अदभुत सेज ॥१४॥ रविदास जगत मंह राम सम कोउ नांहि उदार। गनी

गरीब नवाज प्रभु दीनन के रखवार ॥१५॥ काबे अरु कैलास मंहि जिह कूं ढूढण जांह। रविदास पिआरा राम तउ बैठ रहा मन मांह ॥१६॥ बाहर खोजत का फिरइ घट भीतर ही खोज। रविदास उनमनि साधिकर देखहु पिआ कूं ओज ॥१७॥ बन खोजइ पिअ न मिलहिं बन मंह प्रीतम नांह। रविदास पिअ है बसि रह्यो मानव प्रेमंहि मांह ॥१८॥ बन खोजन का जाइ रे राम अलोपा नांह। सर्व बिआपी राम तौ रविदास सभन कै मांह ॥१९॥ राघो क्रिस्न करीम हरि राम रहीम खुदाय। रविदास मेरे मन बसहिं का खोजहूँ बन जाय ॥२०॥ ओंकार है सत्त नाम आदि जुगादि सभ सति। रविदास सत्त कहि सामुंहे टिकवै नांहि असति ॥२१॥ जौ लौ घट मंहि परान हैं तौ लों जपउ सत्तनाम। रविदास परम पद पाइहिं जिन्ह घटि बसियो राम ॥२२॥ सति ईश कहुं रूप है ता सकति अत अपार। रविदास सत्त कूं धारणा देइहिं पाप निबार ॥२३॥

सत्त सक्ति सों होत है सभ पापन का नास। बधिरा सत्त सों बोध लेइ सत्त भाषै रविदास॥२४॥ रविदास सत्त इक नाम है आदि अंत सचु नाम। हनन करेइ सब पाप ताप सत्त सुखन करि खान॥२५॥ जिन्ह नर सत्त तिआगिया तिन्ह जीवन मिरत समान। रविदास सोई जीवन भला जहं सभ सत्त परधान॥२६॥ रविदास सत्त मति तिआगिए जौ लौं घट मंहि प्रान। सत्त भ्रिस्ट करि जगत मंहि सदा होत अपमान॥२७॥ कायम दायम राम इक दोयम सत्त इमान। रविदास राम अरु सत्त बिन बिरथा सभ कछु जान॥२८॥ रविदास सत्त करि आसरे सदा सत्त सुख पाय। सत्त इमान नहिं छांडिए जग जाय तउ जाय॥२९॥ रविदास सत्त मत छाड़िए जौ लौं घट में प्रान । दूसर कोउ धरम नांहि जग मंहि सत्त समान॥३०॥ अंतकरन अनभउ करहि तउ मानहु सब सत्त। रविदास निज अनुभउ मंहि सत्त मंहि जानिहं सत्त॥३१॥

जहं अंध विश्वास है सत् परख तंह नाहिं। रविदास सत् सोई जानिहै जौ अनभउ होइ मन मांहि॥३२॥ जो नर सत्य न भाषहिं करहिं बिश्वासघात। तिन्हहुं सो कबहुं भुलिहि रविदास न कीजहि बात॥३३॥ जउ नाहीं था सरिस्टि मांहि सोउ होइहि नांह। रविदास इस्ट सर्वत्त है रहइ सरिस्टिहिं मांह॥३४॥ अंतर्मुखी भइ जउ करहिं सत्तनाम करि जाप। रविदास तिन्ह सौं भजहुहिं भागहि तीन्हहु ताप॥३५॥ इड़ा पिंगला सुखम्णा बिध चक्र प्रणायाम। रविदास हौं सबहि छांड़ियों जबहि पाइहु सत्तनाम॥३६॥ इक चिंता सत्त नाम की दरसाइहु परम तत्त। सहज परम भगति भई रविदास पाइहि ब्रह्म सत्त॥३७॥ रविदास अराधहु देवकूं इकमन हुइ धरि ध्यान। आजपा जाप जपत रहहु सत्तनाम सत्तनाम॥३८॥ जा देख्या घिन ऊपजै नरक कुंड मंहि बास। प्रभु भगति सों ऊधरै प्रगटत जन रविदास॥३९॥ हरि सो हीरा छांडि

कै करै आन की आस। ते नर जमपुर जांहिगे सत भाषै रविदास॥४०॥ रविदास मानुष जन्म मंह हौं चितंउ गुरु एक। आदि अंत जो सतगुरु राखै सभन की टेक॥४१॥ रविदास मदुरा का पीजियै जो चढ़ै चढ़ै उतराय। नाम महारस पीजियै जौ चढ़ै नांहि उतराय॥४२॥ रविदास लोरै जिस बूंद कूं सो बूंद समुंद समान। अंतर खोजी कूं मिलइ ब्रह्म बूंद कौ ग्यान॥४३॥ इ क बूंद सौं बुझ गई जनम जनम की प्यास। जनम मरन बंधन टूटई बये रविदास खलास॥४४॥ अमरित रस इक बूंद कूं तलफत हौं दिन रैन। रविदास अमीरस बिन पियै जियरा न पावै चैन॥४५॥ एकै माटी के सभ भाडे एकौ सिरजनहारा। रविदास ब्यापै एकौ घट भीतर एकै घड़ै कुम्हारा॥४६॥ रविदास उपिजेइ इक बूंद ते का ब्राह्मन का सूद। मूरिख जन न जानइ सभ मंहि राम मजूद॥४७॥ रविदास इक ही बूंद सों सब ही भयो वित्थार। मूरिख है जो करत हैं बरन

अबरन बिचार ॥४८ ॥ इक जोति से जउसभ उपजैं तउ ऊंच नीच किस मान। रविदास नाम कत धरैं कहुं को नाद बिंद है समान ॥४९ ॥ रविदास एकै ब्रह्म का होइ रहो सगल पसार। एकै माटी सब घट सृजै एकै सभ कूं सरजनहार ॥५० ॥ रविदास एक ही नूर ते जिमि उपज्यो संसार। ऊंच नीच किह बिध भये बाह्मन अरु चमार ॥५१ ॥ रविदास ऐक ब्रह्म बूंद सों सगल पसारा जान। सभ उपज्यो इक बूंद सों सब ही एक समान ॥५२ ॥ ब्राह्मन अरु चंडाल मंहि रविदास न अंतर जान। सभ मेहि एक ही जोति है सभ घट एक भगवान ॥५३ ॥ इक नजिर सों सभकूं देखे सरिस्टि का सिरजनहारा। सब घट ब्यापक अलख निरंजन कहि रविदास चमारा ॥५४ ॥ सभ मंहि एकु रामह जोति एकहि सिरजनहारा ॥ रविदास रामहि सभन मंहि बाह्मन हुई क चमारा ॥५५ ॥ रविदास जो करता सरिस्टि का वह तो करता एक। सभ मंहि

जोति सरुप एक काहे कहूं अनेक॥५६॥ रविदास हौं देख्या सोधि कर साहिब भेष अनंत। एकै आतम घट घट रमै सब दिसि एकउ भगवंत॥५७॥ आद अंत जिह कर नहीं जिह कर नाम अनंत। सभ करि पालन हार है रविदास अबिगत भगवंत॥५८॥ रविदास एक जगदीस कर धरै अनंतह नाम। मोरे मन में बसि रह्यो अधिमन पावन राम॥५९॥ रविदास हमारो सांइयां राघव राम रहीम। सभ ही राम को रुप हैं केसो क्रिस्न करीम॥६०॥ रविदास कोउ अल्लह कहइ कोउ पुकारइ राम। केसउ क्रिस्न करीम सभ माधउ मुकंदहु नाम॥६१॥ सामी सिरजन हार है राम रहीम खुदाय। रविदास हमारो मोहना पावन केसो राय॥६२॥ अलख अलह खालिक खुदा क्रिस्न करीम करतार। रामह नांउ अनेक हैं कहै रविदास बिचार॥६३॥ जब जब फैलेइ जगत मंहि कुड़ पाप अंधिकार तब तब राखै हत्थ देई रविदास इक

राम हमार ॥६४॥ रविदास आस इक राम की अरु न करहु कोउ आस। राम छांड़ि औरन रमिहँइ रहंइ सदा निरास ॥६५॥ माथै तिलक हाथ जप माला जग ठकने कूं स्वांग बनाया। मारग छांड़ि कुमारग डहिकै सांची प्रीत बिन राम न पाया ॥६६॥ देहरा अरु मसीत मंहि रविदास न सीस निवाय। जिह लौं सीस निवावना सो ठाकुर सभ थाय ॥६७॥ रविदास न पुजइ देहरा और न मसजिद जाय। जंह तंह इस का बास है तंह तंह सीस निवाय ॥६८॥ हिंदू पूजइ देहरा मुसलमान मसीति। रविदास पूजइ राम कूं जिह निरंतर प्रीति ॥६९॥ प्रेम पंथ की पालकी रविदास बैठियो आय। सांचे सामी मिलन कूं आनंद कह्यो न जाय ॥७०॥ रविदास मेरो मन लागियो राम प्रेम को तीर। राम रसायन जउ मिलहिं तउ हरै हमारी पीर ॥७१॥ का मथुरा का द्वारिका का कासी हरिद्वार। रविदास खोजा दिल आपना तउ मिलिया दिलदार ॥७२॥

तुरुक मसीति अल्लह ढूंढइ हिंदु देहरे गुसांई। रविदास ढूंढिया राम कूं जंह मसीत देहरा नांही ॥७३ ॥ देता रहे हज्जार बरस मुल्ला चाहे अजान। रविदास खुदा नंह मिल सकइ जौ लौं मन शैतान ॥७४ ॥ जउ अल्लाह बसहिं मसीत मंह मंदिर मंह भगवान। रविदास खोजियो दिल आपनो तिन्ह पायो रहमान ॥७५ ॥ जौ खुदा पच्छिम बसै तो पूरब बसत है राम। रविदास सेवौं जिह ठाकुरो तिह का ठांव न नाम ॥७६ ॥ सुरत शब्द जउ एक हों तउ पाइहिं परमानंद। रविदास अंतर दीपक जरई घट उपजई ब्रह्मनंद ॥७७ ॥ रविदास सब्दह सह जबहि सुखिह इकमिक होई। अनुभूति सत्तनाम स्वयं देतहिं लोई ॥७८ ॥ ओंकार को ध्यान मंहि जौ लौं सुरति न होय। तौ लौं सांचे ब्रह्म कूं रविदास न बूझइ कोय ॥७९ ॥ रविदास दिआ जगमग जरई बिन बाती बिन तेल। सुरत साधि कर हिय मंहि देख पिया के खेल ॥८० ॥ रविदास

सुरत कूं साधि कर मोहन सों कर पिआर। भौ जल कर संकट कटंहि छुटंहि बिघन बिकार॥८१॥ जीवन जोति कैसे जगि कैसे होइ अंत। रविदास मनुष न जानंहि जानत हैं भगवंत॥८२॥ रविदास जन्मे कउ हरस का मरने कउ का सोक। बाजीगर के खेल कूं समझत नाहीं लोक॥८३॥ रविदास सोइ साधु भलो जउ जग मंहि लिपत न होय। गोबिंद सों रांचा रहइ अरु जानंहि नंहि कोय॥८४॥ रविदास सोइ साधु भलो जउ मन अभिमान न लाय। औगुन छांड़हि गुन गहइ सिमरइ गोविंद राय॥७५॥ रविदास सोइ साधु भलो जउ रहइ सदा निरबैर। सुखदाई समता गहइ सभनह मांगहि खैर॥८६॥ रविदास सोइ साधु भलो जउ अपन न जताय। सत्तवादी सांचा रहइ मन हरि चरनन मंह लाय॥८७॥ रविदास सोइ साधु भलो जिह मन निर्मल होय। राम भजहि विषया तजहि मिथ भाषी न होय॥८८॥ रविदास सोइ साधु भलो जउ जानहि

पर पीर। पर पीरा कहुं पेखि के रहवे सदहि अधीर॥८९॥ रविदास सोइ साधु भलो जो पर उपकार कमाय। जइसोइ कहहि वइसोइ करहि आपा नांहि जताय॥९०॥ रविदास सोइ साधु भलो जो निहकपट निरपच्छ। छमासील अरु सरल मनह बाहर भीतर स्वच्छ॥९१॥ रविदास सोइ साधु भलो निर्मल जाके बैन। जिह करि दरस औ परस सों मन उपजहि सुख चैन॥९२॥ रविदास सोइ साधु भलो जउ हंसा गति होय। काम करम सभ छांड़ि कर राम भजन में खोय॥९३॥ रविदास सोइ साधु भलो जिह मन बसइ जगदीस। रहइ ओट ओंकार की बुरो भलो सहइ सीस॥९४॥ रविदास सोइ साधु भलो जौ मनह दोष मिटाय। उर मंह आप न थापइ तृस्ना आस जलाय॥९५॥ रविदास सोइ साधु भलो जौ साहिब हाथ बिकाय। साहिब भेंट चढ़ान कउ अपनह सीस कटाय॥९६॥ रविदास सोइ साधु भलो जिह मन नांहि अभिमान।

हरस सोक जानइ नहिं सुख दुख एक समान ॥९७॥ रविदास कहै जाके रिदै रहै रैन दिन राम। सो भगता भगवंत सम क्रोध न ब्यापै काम ॥९८॥ जिहवा सों ओंकार जप हत्थन सों कर कार राम मिलंहि घर आइ कर कहि रविदास बिचार ॥९९॥ नेक कमाइ जउ करहि ग्रह तजि बन नंहि जाय। रविदास हमारो राम राय ग्रह महि मिलिह आय ॥१००॥ ग्रहहिं रहहु सति करम करहु हरदम चिंतहु ओंकार। रविदास हमारो बांधला हइ केवल नाम अधार ॥१०१॥ एक भरोसो राम को अरु भरोसो सत्त कार। सफल होइहु जीवना कहि रविदास बिचार ॥१०२॥ करम बंधन मंह रमि रह्यो फल कौ तज्यो आस। करम मनुष कौ धरम है सत भाषै रविदास ॥१०३॥ सौ बरस लौं जगत मंहि जीवत रहि करु काम। रविदास करम ही धरम है करम करौ निहकाम ॥१०४॥ धरम हेतहिं कीजिये सौ बरस लौं कार। रविदास करमहि धरम है फल मंहि

नंहि अधिकार ॥१०५॥ धरम समुझि जो कार होइ उह कर फल होइ इस्ट। रविदास कोउ भी करम फल होहि नांहि अनिस्ट ॥१०६॥ रविदास मनुष कर धरम है करम करहि दिन रात। करमनहि फल पावना नहीं काहु के हाथ ॥१०७॥ परकिरती परभाउ बस मानुष करत है कार। मानुष तउ है निमित रुप कहि रविदास बिचार ॥१०८॥ करमन ही परभाउ तजि निहकरमी होइ कर काम। रविदास निहकरमी करम ही मेल कराए राम ॥१०९॥ सुख दुख हानि लाभ कउ जउ समझहि इक समान। रविदास तिन्हहिं जानिए जोगी पुरुष सुजान ॥११०॥ करम जोग की साध सों आतम राम सुध होय। रविदास बिजेता सो भया करम करै जउ कोय ॥१११॥ साधक भांति जोग जुगत करम करहु रविदास। धरम बोधि कीजहु करम फल की त्यागहु आस ॥११२॥ राग द्वेष कूं छांड़ि कर निहकरम करहु रे मीत। सुख दुख सभ

मंहि थिर रहिं रविदास सदा मन मीत॥११३॥ जिहवा भजै हरि नाम नित हत्थ करंहि नित काम। रविदास भए निहचिंत हम मम चिंत करैंगे राम॥११४॥ रविदास श्रम करि खाइहि जौ लौं पार बसाय। नेक कमाई जउ करइ कबहुं न निहफल जाय॥११५॥ श्रम कउ ईसर जानि कै जउ पूजहि दिन रैन। रविदास तिन्हहि संसार मंह सदा मिलहि सुख चैन॥११६॥ रविदास हौं निज हत्थहिं राखौं रांबी आर। सुकिरित ही मम धरम है तारैगा भव पार॥११७॥ प्रभ भगति स्त्रम साधना जग मंह जिन्हहिं पास। तिन्हहिं जीवन सफल भयो सत्त भाषै रविदास॥११८॥ धरम करम दुइ एक हैं समुझि लेहु मन मांहि। धरम बिना जौ करम है रविदास न सुख तिस मांहि॥११९॥ जन्म जात मत पूछिए का जात अरु पात। रविदास पूत सभ प्रभ के कोउ नहिं जात कुजात॥१२०॥ जात पात के फेर मंहि उरझि रहइ सब लोग। मानुषता कूं

खात हइ रविदास जात कर रोग ॥१२१॥ जनम जात कूं छाडि करि करनी जात प्रधान। इहयौ साचा धर्म है कहै रविदास ब्खान ॥१२२॥ ब्राह्मन खत्तरी बैस सूद रविदास जनम ते नांहि। जौ चाहइ सुबरन कउ पावई करमन मांहि ॥१२३॥ बेद पढ़ई पंडित बन्यो गांठ पन्ही तउ चमार। रविदास मानुष इक हइ नाम धरै हइं चार ॥१२४॥ नीच नीच कर मारहिं जानत नहीं नदान। सभ का सिरजनहार है रविदास ऐके भगवान ॥१२५॥ रविदास जनम के कारनै होत न कोउ नीच। नर कूं नीच करि डारि है ओछे करम की कीच ॥१२६॥ रविदास जाति मत पूछइ का जात का पात। ब्राह्मन खत्री बैस सूद सभन की इक जात ॥१२७॥ जात जात में जात है ज्यों केलन में पात। रविदास न मानुष जुड़ सकैं जौं लौं जात न जात ॥१२८॥ रविदास ब्राह्मन मति पूजिये जउ होवै गुनहीन। पूजिहि चरन चंडाल के जउ होवै गुन

परवीन॥१२९॥ रविदास सुकरमन करन सों नीच ऊँच हो जाय। करइ कुकरम जौ ऊंच भी तौ महा नीच कहलाय॥१३०॥ दया धर्म जिन्ह में नहिं हिरदै पाप को कीच। रविदास तिन्हहिं जानि हो महा पातकी नीच॥१३१॥ जिन्ह करिहिरदै सत बसई पंच दोष बसि नांहि। रविदास तौ नर ऊच भये समुझि लेहु मन मांहि॥१३२॥ पंच दोष तजि जो रहई संत चरन लव लीन। रविदास ते नर जानई ऊँचह अरु कुलीन॥१३३॥ ऊँचे कुल के कारणै ब्राह्मन कोय न होय। जउ जानहि ब्रह्म आत्मा रविदास ब्राह्मन सोय॥१३४॥ काम क्रोध मद लोभ तजि जउ करइ धरम कर कार। सोई बाह्मन जानिहि कहि रविदास बिचार॥१३५॥ रविदास जी वेत्ता ब्रह्म का सोइ ब्राह्मन जान। ब्रह्म न जउ जानिहि तउ न ब्राह्मन मान॥१३६॥ धरम करम जानै नहीं मन मंह जाति अभिमान। ऐसउ ब्राह्मन सों भलो रविदास श्रमुक हुं जान॥१३७॥

दीन दुखी के हेत जउ बारै अपने प्रान। रविदास उह नरसूर कौं सांचा छत्री जान॥१३८॥ अंग अंग कटवाहि जउ दीनन करि हेत। रविदास छत्री सोइ जानिए जौ छाड़ै नांहि खेत॥१३९॥ रविदास वैस सोइ जानिये जउ सत्त कार माय। पुंन कमाई सदा लहै लोरै सर्वत्त सुखाय॥१४०॥ सांची हाटी बैठि कर सौदा सांचा देइ। तकड़ी तोलै सांच की रविदास वैस है सोइ॥१४१॥ रविदास जउ अति पवित्त है सोई सूदर जान। जउ कुकरमी असुध जन जिन्हें न सूदर मान॥१४२॥ हरिजनन करि सेवा लागे मन अहंकार न राखै। रविदास सूद सोइ धंन है जउ असत्त बचन न भाखै॥१४३॥ मंदिर मसजिद दोउ एक हैं इन मंह अंतर नांहि। रविदास राम रहमान का झगड़ा कोउ नांहि॥१४४॥ रविदास हमारो राम जोई सोई है रहमान। काबा काशी जानीयहि दोउ एक समान॥१४५॥ मसजिद सों कछु घिन नहीं मंदिर सो नहीं पिआर। दोउ मंह

अल्लह राम नहीं कह रविदास चमार ॥१४६ ॥ मुसलमान सों दोसती हिंदुअन सों कर प्रीत। रविदास जोति सभ राम की सभ हैं अपने मीत ॥१४७ ॥ जब सभ करि दोउ हाथ पग दोउ नैन दोउ कान। रविदास पृथक कैसे भये हिंदू मुसलमान ॥१४८ ॥ रविदास पेखिया सोध करि आदम सभी समान। हिंदु मुसलमान कउ स्रिष्टा एक भगवान ॥१४९ ॥ कहन सुनन कूं दुइ करि खालिक कीयों तमासा। हिंदु तुरक दोउ एक है सत्त भाषै रविदासा ॥१५० ॥ रविदास कंगन कनक मंहि जिमि अंतर कछु नांहि। तैसउ ही अंतर नहीं हिंदुअन तुरकन मांहि ॥१५१ ॥ हिंदु तुरक मंहि भेद नाहीं सभ में रक्त अरु मास। दोउ एकह दूजा को नाहीं पेख्यो सोध रविदास ॥१५२ ॥ हिंदु तुरक मंहि नहीं भेद दुइ आयहु इक द्वार। प्राण पिंड लोहु मांस एकइ कहि रविदास बिचार ॥१५३ ॥ रविदास उपजइ इक नूर ते ब्राह्मन मुल्ला सेख। सभ को करता एक है सभ

कुं एक ही पेख ॥१५४॥ रविदास सोइ सूरा भला जउ लरै धरम के हेत। अंग अंग कटि भुइं गिरै तउ न छाड़ै खेत ॥१५५॥ धरम हेत संग्राम महं जौ कटाए काटे सीस। सो जीवन सफला भया रविदास मिलंहि जगदीस ॥१५६॥ बचन गयो नंह आत है सीस कटा फिर आय। रविदास बचन कूं राखिए सिर जाइहि तउ जाय ॥२५७॥ रविदास बचन जौ दे दियौ वह न जाने पाय। बचन हरै को जगत मंहि कछु न सेस रहाय ॥१५८॥ सत्त संतोष अरु सदाचार जीवन को आधार। रविदास भये नर देवते जिन तिआगो पंच बिकार ॥१५९॥ जो बस राखे इंद्रियां सुख दुख समझि समान। सोउ अमरित पद पाइगो कहि रविदास बखान ॥१६०॥ बुद्धि अरु बिबेकहिं जउ राखन चाहौ पास। इंदरियां संग निरत कौ तजि देहु रविदास ॥१६१॥ रविदास इच्छाएं आपुनी भोगन से रख दूर। मन बुद्धि रहंहि सांत नित घट मंहि रहिवै नूर ॥१६२॥ कुरमे भांति

जउ रहहिं मन इंदिरिया रविदास। सांत रहइ नित आतमा बढ़हि आत्म बिसास॥१६३॥ जो कोउ लोरै परम सुख तउ राखै मन संतोष। रविदास जहां संतोष है तहां न लागै दोष॥१६४॥ धन संचय दुख देत है धन त्यागे सुख होय। रविदास सीख गुरुदेव की धन मति जोरे कोय॥१६५॥ सच्चा सुख सत धरम मंहि धन संचय सुख नांहि। धन संचय दुख खान है रविदास समुझि मन मांहि॥१६६॥ सुख सरिता मंह बूड़ि करि सूझ बूझ मति खोय। दुख की बदरी पेखि कै रविदास नह दीजिये रोय॥१६७॥ सुख दुख सम करि जानहु तउ दुखह सुख होय। रविदास जो सुखहि दुख कहै तउ सुख भी दुख होय॥१६८॥ रविदास प्रेम नहि छिप सकई लाख छिपाए कोय। प्रेम न मुख खोलै कभउं नैन देत हैं रोय॥१६९॥ रविदास सदा ही राखिए मन मंहि सहज सभाओ। राखे नहीं कुपंथ पग जौ लोरौं सुख चाओ॥१७०॥ जो जन

दुष्ट कुमारगी बइठहि नंहि तिंह पास। जो जन संत सुमारगी तिन पाय लागो रविदास॥१७१॥ रविदास जु है बेगमपुरा उह पूरन सुख धांम। दुख अंदोह अरु द्वेष भाव नांहि बसहिं तिहिं ठांम॥१७२॥ रविदास मनुष करि बसन कूं सुख कर हैं दुइ ठांव। इक सुख है स्वराज मंहि दूसर मरघट गांव॥१७३॥ ऐसा चाहूं राज मैं जहां मिलै सबन कौ अन्न। छोट बढ़ो सभ सम बसैं रविदास रहे प्रसन्न॥१७४॥ मन मंहि सत्त संतोष रखहु सभ करि सेवा लाग। सेवा सब कछु देत है रविदास सेवंहि मति त्याग॥१७५॥ दीन दुखी करि सेव मंहि लागि रह्यो रविदास। निसि बासर की सेव सौं प्रभु मिलन की आस॥१७६॥ धुआं तपन मंहि का धरा धूम तपन ही त्याग। रविदास मिलि है मोष धाम सेवा ही तप आग॥१७७॥ रविदास रात न सोइये दिवस न करिये स्वाद। अह निसि हरि जी सुमिरिये छांडि सकल प्रतिवाद॥१७८॥ रविदास तूं कावच

फली तुझे न छीवै कोय। मैं निज नांम न जानियां भल ाकहां ते होय॥१७९॥ अंतर गति रांचै नहीं बाहर करै उजास। ते नर जमपुर जांहिगे सत भाषै रविदास॥१८०॥ सब सुख पावै जासु तें सो हरि जू को दास। कोउ दुख पावैं जासु तें सो न दास रविदास॥१८१॥ हरि गुर साध समान चित नित आगम तत मूल। इन बिच अंतर जिन परौ करवत सहन कबूल॥१८२॥ रविदास जीव कूं मारि कर कैसो मिलंहि खुदाय। पीर पैगंबर औलिया कोउ न कहइ समुझाय॥१८३॥ रविदास जो पोषण हेत गउ बकरी नित खाय। पढ़ई नमाजैं रात दिन तबहुं भिस्त न पाय॥२८४॥ रविदास मूंडह काटि करि मूरख कहत हलाल॥ गला कटावहु आपना तउ का होइहि हाल॥१८५॥ रविदास जो आपन हेत ही पर कूं मारन जाई। मालिक के दर जाइ करि भोगहि कड़ी सजाई॥१८६॥ प्रानी बध नहिं कीजियहि जीवह ब्रह्म समान। रविदास पाप

नंह छूटइ करोर गउन करि दान॥१८७॥ रविदास जिभ्या स्वाद बस जउ मांस मछरिया खाय। नाहक जीव मारन बदल आपन सीस कटाय॥१८८॥ रविदास जीव मत मारहिं इक साहिब सभ मांहि। सभ मांहि एकउ आतमा दूसरह कोउ नांहि॥१८९॥ अपनह गीव कटाइहिं जौ मांस पराया खांय। रविदास मांस जौ खात हैं ते नर नरकहिं जांय॥१९०॥ दया भाव हिरदै नहीं भखहिं पराया मास। ते नर नरक मंह जाइहि सत्त भाषै रविदास॥१९१॥ जीवत कूं मुरदा करहिं अरु खाइहिं मुरदार। मुरदा सम सभ होइहिं कहि रविदास बिचार॥१९२॥ पराधीनता पाप है जान लेहु रे मीत। रविदास दास प्राधीन सों कौन करै है प्रीत॥१९३॥ पराधीन कौ दीन क्या पराधीन बेदीन। रविदास दास प्राधीन कौ सबही समझै हीन॥१९४॥ रविदास संसा जीव महिं, साखी सौं बिलगाय। जीवन मरन रहिस कूं, साखी कहै समुझाय॥१९५॥

रविदास रात न सोविये, दिवस न करिये सुआद। अहि निसि हरि जी सिमरिए, छाडि सकल प्रतिवाद॥१९६॥ साध संगति पूंजी भइ, हौं वस्त लई निरमोल। सहिज बलदिया लादि करि, चलियो लहन पिव मोल॥१९७॥ जैसा रंग सैंबल करि, ह्वै तैसा यहि संसार। हौं रंग रंगौ राम महिं, भणै रविदास बिचार॥१९८॥ भौ सागर रा तरन कूं, एकौ नाम अधार। रविदास कभउं नहिं छाडिये, राम नाम पतवार॥१९९॥ सुमिरन कोटि अघन की, होवै समन रविदास। ज्यूं कि अघ निरमूलिये, परम जोत परगास॥२००॥ राम नाम जिह रम्यो, सोइ तनु आपु उजास। अन्त छार ह्वै जाइये, वेगि चेतु रविदास॥२०१॥ गुर ज्ञान दीपक दिया, बाती दइ जलायि। रविदास हरि भगति कारनै, जनम मरन बिलमाये॥२०२॥ अंधला जौ गुरु पाइहि, तौ शिष भयौ निरंख। रविदास ज्ञान चाषू बिना, किमि मिटयि भ्रम फंद॥२०३॥ माया दीपकु पेखि करि,

नर पतंग अंधियाये। रविदास गुरु रा ज्ञान जिनु, बिरला को बचि जाय॥२०४॥ निहचल आनन्द निधि मिलि, बिलगौ आधि अपार। रविदास सुमिरण सार सौं पायो दरस मुरार॥२०५॥ पलु पलु छिनु छिनु सिमरीये, जौ लौ्रे हरि दुआर। हरि मजनु विन सिव नहीं, भणै रविदास चमार॥२०६॥ भौ सागर दुतर अति, किधुं मुरिख यहु जान। रविदास गुरू पतवार है, नाम नाव करि जान॥२०७॥ रविदास तनु पियरौ पातरा, झरत न लागयि बार। जरा मीचु ज्यौं आवयि, जात न लागहिं वार॥२०८॥ सोई तन कंचन जानइ, जिह तन नाम परगास। रविदास राम चिंतामणि, चहुं दिस औज उजास॥२०९॥ निस दिन हरि जु सिमरिये, त्यागि जगत करि धंद। रविदास संत सहेलड़ा, विचरत होवै निरदंद ॥२१०॥ जो लोहा पारस मणि, हिरन किरन दमकाये। रविदास राम पारस मणि, ओह दरस मंहि बौराये॥२११॥ समाधि थिति हवै संत जन,

अपनहु अप्प मिटाहिं। जिमि गंग समुंद मिलि, रविदास समुंदहिं बिलांहि॥२१२॥ अन भावत नियरा बसै, मन भावतां परदेस। अन देखे उन दरस बिन, होवै दुख बढ़त घनेस॥२१३॥ ज्यूं सुधि आबत पीव की, बिरह उठत तन आगि। ज्यूं चूने की कांकरी, ज्यों छिरके त्यों आगि॥२१४॥ जिह नित देखन चाहि हौं, तें नैनन ते दूरि। रविदास कहि अनभावते, रहहिं निकट भरपूरि॥२१५॥ कामधेनि पारस पोलि, कलप रूप रा बाड़ि। रविदास हरि रा भगति बिन, ग्रिह तैं भलि उजाड़ि॥२१६॥ तुहि मुहि हमु एक हैं, तुझ लौं मोरि दौर। रविदास पंखी जिहाज कौ, नहिं आनत कोउ ठौर॥२१७॥ रविदास पीतम इक तुहि, तुमरे मित अनेक। ससि कौ कमोद हैं बहु, कुमोद कौ ससि एक॥२१८॥ कोटि कलप जीवन अलप, बिच हरि भगति बिलास। हरि सिमरण सफल जनम, दुह फल लहि रविदास॥२१९॥ अनन्द मूरति मित्र

की, रहइ सदा सदा चित पूरि। नैनन ही समुहे रहत, रविदास नियरे का दूरि॥२२०॥ कोयल तरसै अंब को चात्रिक तरसत नीर। रविदास लौचै दरस को, प्रान परत नहीं धीर॥२२१॥ ससि चकोर सूरज कंवल, चात्रिक घन की रीति। रविदास इवि मुहि राखियो, हित चित पूरण परीति॥२२२॥ चलत हलत बैठत उठत, धरि हूं तुमरो ध्यान। रविदास तू मुहि मन बसइ, चरण कंवल की आन॥२२३॥ मूरखि मुख कमान है, कटुक वचन भयो तीर। सांचरी मारे कांन महिं, साले सगल सरीर॥२२४॥ रविदास मूरिख समुझयि नहिं बिना बिचार। हने परायि आतमा, जीभ लियां तरवार॥२२५॥ राम प्रेम हौं बरजि किमि, अब बरजत नहिं काज। रोम राम अमी रमि गयो, ताहि म होत इलाज॥२२६॥ नाम मूल है ज्ञान कौ, नाम मुक्ति कौ दबार। जा हिरदै हरि बसै, परहिं न जग विउपार॥२२७॥ इहु जग दुख की खेतरी, इहु

जानत सब कोय। ज्ञानी काटहि हरि नाम सों, मूरिख काटहिं रोय॥२२८॥
कटुक बचन नहिं बोलिए, सब घट हरि को बास। इहु ज्ञान कौ दवार है, कहै रविदास विचार॥२२९॥ सत विद्या को पढ़े प्राप्त करे सदा ज्ञान। रविदास कहे बिन विद्या नर को जान अजान॥२३०॥